॥ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ॥ ॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः॥

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्री बालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज

जीवनवृत्तसौरभ
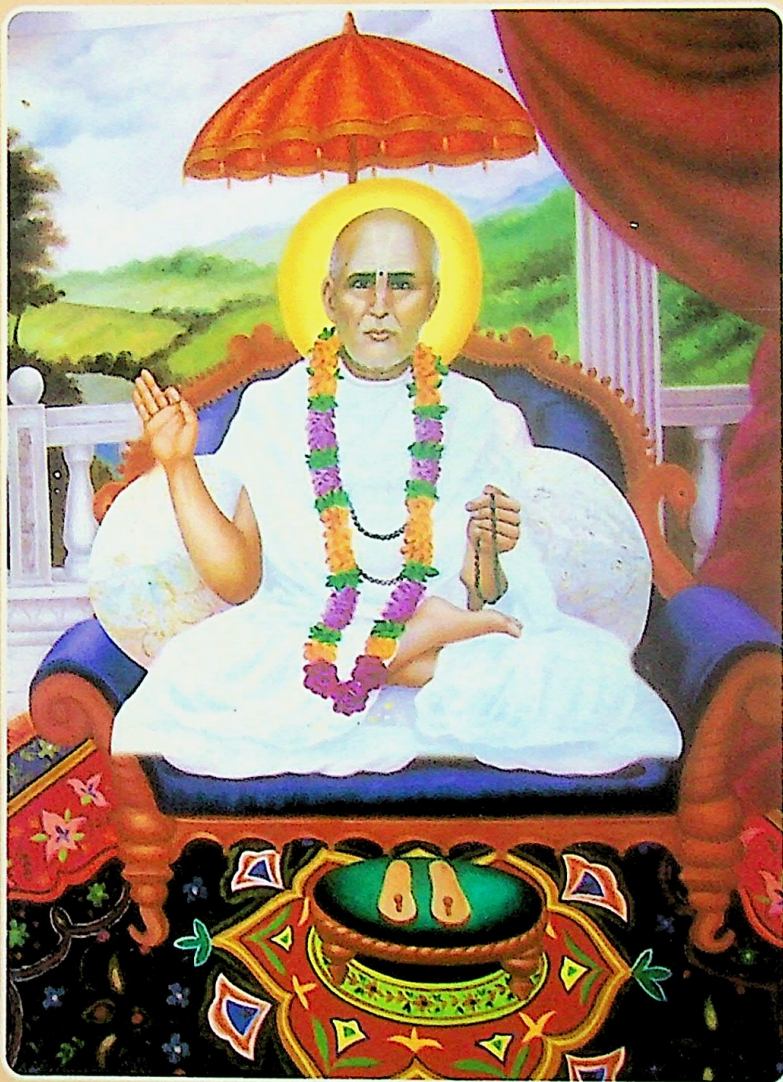
लेखक : पं. गोविन्ददास 'सन्त'
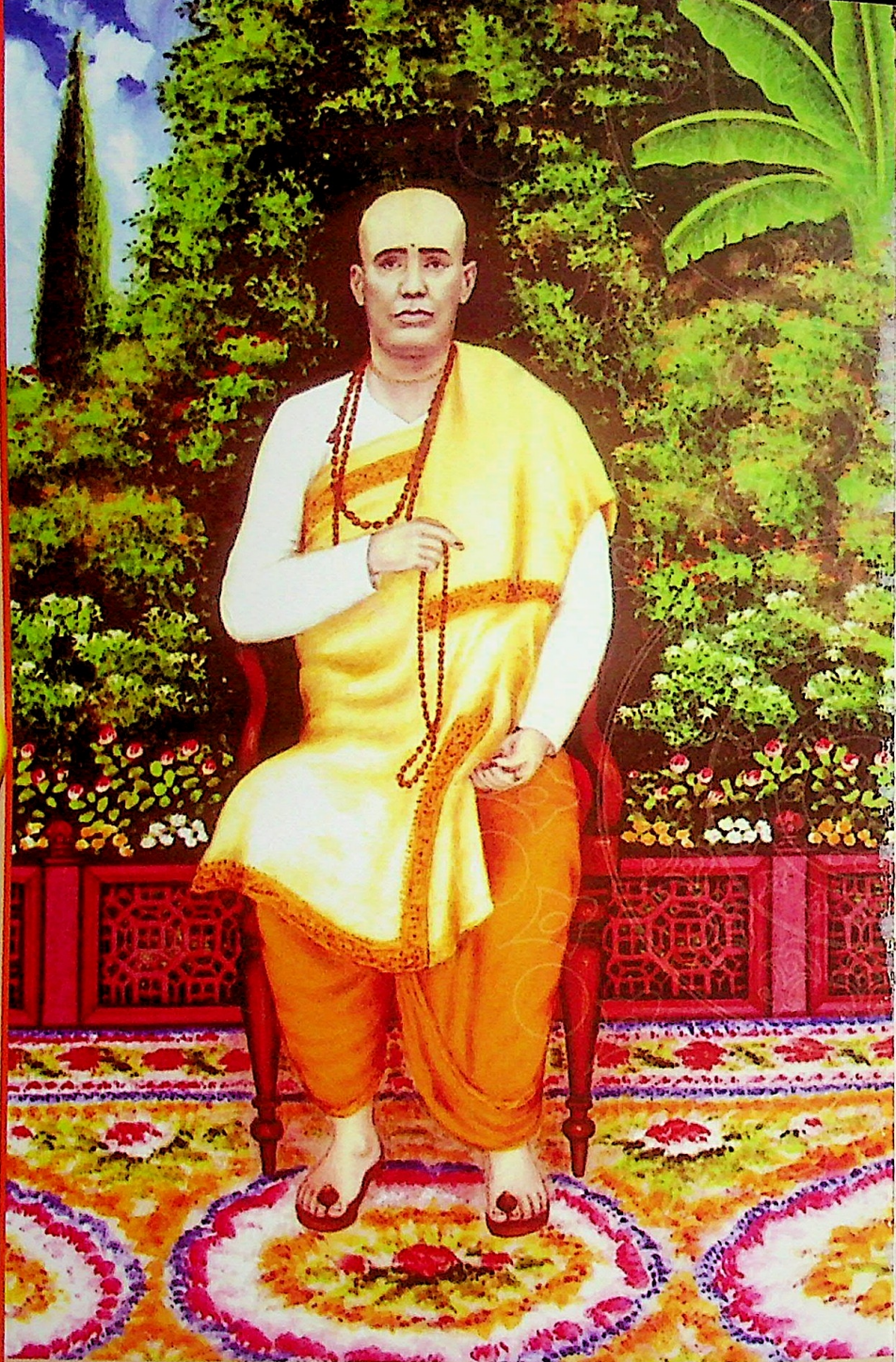
अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्री बालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *
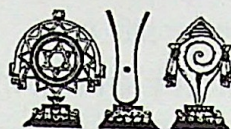
॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीमन्निखिल-महीमण्डलाचार्य-चक्रचूड़ामणि-सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र-श्रीहंस-
सनकादि-नारद-निम्बार्कोपवृंहितस्वाभाविक-द्वैताद्वैत-सिद्धान्त-
संपोषक--त्रय्यन्तपदवाक्यप्रमाणपारावारीण-यतिपतिदिनेश-
देशिकेन्द्रराजराजेन्द्र-समभ्यर्चितचरणसरोरुह-भगवन्निम्बा-
र्काचार्यपादपीठाधीश्वरानन्तानन्तसमलङ्कृतजगद्-
गुरु निम्बार्काचार्य

श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज

का सचित्र

जीवनवृत्तसौरभ

लेखकः--

पं० श्रीगोविन्ददास 'सन्त' धर्मशास्त्री-पुराणतीर्थ

काव्य-साहित्य-धर्ममनीषी द्वैताद्वैत विशारद, निम्बार्कभूषण

प्रकाशक--

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ

सलेमाबाद, पुष्करक्षेत्र जि. अजमेर (राज०)

आचार्यश्री के शताब्दी पाटोत्सव पर प्रकाशित

वि० सं० २०६३ श्रीनिम्बार्काब्द ५१०२

पुस्तक प्राप्ति स्थान--
अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

प्रथमावृत्ति--५००
चैत्र कृष्ण १३ शुक्र. वि. सं. २०३७

द्वितीयावृत्ति--२०००
चैत्र कृष्ण १३ शनिवार वि. सं. २०६३
दिनांक १७ मार्च २००७

मुद्रक--
श्रीनिम्बार्क - मुद्रणालय
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

न्यौछावर
पन्द्रह रुपये

''आचार्यं मां विजीनीयात्''

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज

प्रातर्वन्दनीय पूर्वाचार्यो के उदात्त आदर्शपूर्ण जीवन चरित से न केवल मार्गदर्शन एवं प्रेरणा मात्र ही मिलती अपितु उसके निष्ठापूर्वक मनन-चिन्तन से अनन्त असीम पुण्य मिलता है । उनका पावनतम मंगलमय एवं उनके वेदादि शास्त्र सम्मत सदाचार सत्कर्मादि सभी प्राणीमात्र के हितार्थ ही होते हैं। हमारे श्रुतिस्मृतिपुराणादि शास्त्रों में आचार्य--गुरु चरणों की अतुलनीय महिमा का जो अनुपम वर्णन है वह परम द्रष्टव्य है । निम्नाङ्कित कतिपय उद्धरणों से स्पष्ट है ।

आचार्यं मां विजानीयान्नावमन्येत्कर्हिचित् ।
न मर्त्यबुद्ध्या सूयेत सर्वदेवमयो गुरुः ।।
''तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत्समित्पाणिः
श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्''
न बिना गुरुसम्बन्धं ज्ञानस्याधिगमः कुतः ।
गुरुः पारयिता तस्य ज्ञानं प्लवमिहोच्यते ।।
तस्माद्गुरुं प्रपद्येत जिज्ञासुः श्रेय उत्तमम् ।
शाब्दे परे च निष्णातं ब्रह्मण्युपसमाश्रयम् ।।

अतः निष्ठापूर्वक गुरुप्रपत्ति ग्रहण कर तदनुकूल सदाचरण करना जीवन में नितान्त अपेक्षित है । इससे इहामुत्र सर्वत्र कल्याण है । श्रीसर्वेश्वर प्रभु के अनुग्रहविग्रहरूप आचार्यस्वरूप के आविर्भाव का भी प्रमुखतया यही उद्देश्य होता है । जो प्राणी स्वकीय कर्तव्य का परिज्ञान नहीं कर सकते हैं तथा भगवदीय त्रिगुणात्मिका माया की भीषण ज्वाला से दन्दह्यमान रहते हैं, उनके श्रेय साधन के लिये ही आचार्य प्रभु का प्राकट्य होता है ।

आचार्यप्रवर श्रीश्रीभट्टदेवाचार्यजी महाराज ने ''श्रीयुगल-शतक'' वाणी ग्रन्थ में ''धनी गुरु जिन हरिनाम सुनायौ'' ''हरि-गुरु-पद-पंकज रति

होई'' इन दिव्य वचनों से गुरुमहिमा का कितना मधुरातिमधुर भाव व्यक्त किया है । आचार्यवर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज ने भी-'श्रीपरशुराम सागर' में--

श्रीगुरु संत समान हरि, जो उपजै विश्वास ।
दरसन परस्यां परम सुख 'परसा प्रेम निवास ।।
श्री गुरु समझि सनेह करि, बारंबार संभारि ।
'परसराम' भव सिंधु की, नांव उतारै पारि ।।
श्री गुरु कहैं सो मानियें, सत्य सबद बलि जाउँ ।
झूठे बकै जग प्रसराम, सुमरि सांच हरि नाउँ ।।

इन परम मङ्गलकारी सदुपदेशों से हरिस्वरूप आचार्य गुरु चरणों की गरिमा का कितनी सरसता से प्रतिपादन किया है, जिसमें वेदादिशास्त्रों के विशुद्ध नवनीत का सुन्दर दर्शन है । यथार्थतः हमारी भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान सर्वातिशायी माना गया है।

परमश्रद्धास्पद प्रातःस्मरणीय अनन्तश्रीविभूषित जगद्‌गुरु श्री निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर अस्मद्‌गुरुवर्य्य श्रीआचार्य चरणों का आविर्भाव भी लोकहितार्थ ही हुआ । आपश्री का परम महनीय परम पवित्र गरिमापूर्ण जीवन भी कितना तपःपूत गौरवास्पद एवं आचार सम्पन्न रहा है जिसका दिग्दर्शन मात्र भी कराना अशक्य है । तथापि इस लघुकलेवरात्मक ''जीवनवृत्तसौरभ'' में विद्वद्वरेण्य पं० श्रीगोविन्ददासजी 'सन्त' धर्मशास्त्री पुराणतीर्थ द्वैताद्वैत विशारद ने बड़े ही परिश्रम पूर्वक संक्षिप्तरूप से महाराजश्री के जीवनवृत्त का संकलन कर जो प्रकाशन कराया है वह नितान्ततया परम भावुक श्रद्धालु भगवज्जनों के लिये लाभप्रद रहेगा ।

मिति चैत्र कृष्ण १३   श्रीमद्गुरुदेवपदसरोजभक्तिरसकामः-
शुक्रवार, वि. सं. २०३७   **श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः**
दि. ३/२/१९८१

परमाराध्य-आचार्य का अनुग्रह स्वरूप

अनन्तानन्त जीवों को अपनी सहज अनुकम्पा से नश्वर-अज्ञान-मृत्युभयरूप संसार से मुक्तकर नित्यचिन्मय अभयरूप भगवत्पद प्रदान करने वाले सद्गुरुदेव-आचार्य की महिमा अनिर्वचनीय है । भक्तवत्सल भगवान् श्रीहरि अज्ञजन द्वारा स्वयं के प्रति किये गये अपराध तो क्षमा कर देते हैं परन्तु प्रमाद-अवज्ञादिवश सद्गुरुदेव-आचार्य एवं निष्कपट-अकिञ्चन भक्त के प्रति किये गये अपराधों को प्रभु कभी क्षमा नहीं करते । शास्त्रों में आचार्य को भगवान् का अभिन्न स्वरूप बताया गया है । **''यस्य देवे पराभक्तिर्यथादेवे तथा गुरौ । तस्यै ते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः ।''** जिस महात्मा साधक की परमोत्कृष्टा फलरूपा भक्ति जैसे देवाधिदेव श्रीहरि के प्रति अविच्छिन्न है वैसी ही भक्ति सद्गुरुदेव-आचार्य के प्रति हो तो उसके सभी प्रयोजन अर्थात् धर्मादि सहित भगवद्भावापत्तिरूप मोक्षलक्षण प्रयोजन सहज में प्रकाशित होते हैं, प्राप्त होते हैं । **''प्रपत्तेश्च हरेर्गुरोः''** कहकर परमश्रेयः के लिए जैसे हरि की शरणागति आवश्यक है वैसे ही गुरु की शरणागति भी परमावश्यक है । **''तद् विज्ञानार्थं स गुरु मेवाभिगच्छेत्''** इस श्रुति वाक्य का भी यही तात्पर्य है । सद्गुरु के अनुग्रह के बिना जीवों की प्रपन्नता श्रीहरि स्वीकार नहीं करते । केवल भक्त और वैष्णवभक्त में अन्तर बताते हुए प्रभु कहते हैं-**''न मद्भक्तोऽपि वैष्णवः''** अर्थात् जो भक्त सद्गुरु के आश्रय के बिना ही मुझ में अनन्य अनुराग पूर्वक भक्ति तो करता है किन्तु कदाचित् व्यामोह में पड़कर योगभ्रष्ट हो जाता है । जो साधक अनादि-अविच्छिन्न वैष्णव परम्परागत आचार्य का आनुगत्य ग्रहण कर भगवद्भक्ति, आराधना करता है वह वैष्णव भक्त कहलाता है । आचार्यानुग्रह से वह कभी भ्रष्ट नहीं हो सकता । उसी के लिए प्रभु कहते हैं--**''नभे भक्तः प्रणश्यति ।''**

आचार्य को स्वयं से अभिन्न बताते हुए सच्चिदानन्द, पुरुषोत्तम भगवान् सर्वेश्वर श्रीकृष्ण ने अपने प्रिय सखा उद्धव से कहा **''आचार्यं मां विजानीयात् नावमन्येत कर्हिचित् । नमर्त्यबुद्ध्यासूयेत सर्वदेवमयो-गुरुः।''** (भा. स्क. ११ अ. १७ श्लो. २७) हे प्रिय उद्धव ! सद्गुरुदेव विष्णुमार्ग प्रदर्शक आचार्य को मेरा ही स्वरूप जानना चाहिए, उनकी कभी

किसी भी स्थिति में अवज्ञा न करे । सामान्य मनुष्यभाव रखकर उनमें दोषारोपण भी न करे, क्योंकि गुरु सर्वदेवमय होता है । उपनिषद् का **''आचार्यदेवो भव''** यह वचन भी इसी भाव को व्यक्त करता है ।

आचार्य के सदुपदेश और तपोमय जीवन के प्रत्येक क्षण जन-जन के लिए परम प्रेरणादायी तथा अनुकरणीय होते हैं । भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं--यद्यदाचरति श्रेष्ठस्ततदेवेतरोजनः । स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ।'' ऐसे ही उत्तमश्लोक आचार्यों में अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज अपने समय के महान् आदर्श स्वरूप आचार्य हुए । आपश्री ने वि० सं० १९६३ से २००० पर्यन्त ३७ वर्षों तक पीठाधीश्वर आचार्य के रूप में अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय का चतुर्दिक् प्रचार-प्रसार के साथ सर्वतोभावेन उपवृंहण किया । भगवद्गीता, भागवत आदि सद्ग्रन्थों का अनुशीलन, सदुपदेश, मन्त्रजप, भगवदाराधना, नित्य हवन, घण्टों तक निर्निमेष सूर्यावलोकन, स्वसम्प्रदाय एवं पूवाचार्य परम्परा की मर्यादाओं का परिपालन, भगवल्लीलानुकरण के समय दीर्घकाल तक खड़े-खड़े दर्शन करना इत्यादि आपश्री की अनुपम कठिनतम साधना ही है । आपश्री के पीठाभिषेक-पाटोत्सव-शताब्दी के उपलक्ष में आदर्शमय-गौरवपूर्ण ''जीवनवृत्त सौरभम्'' का प्रकाशन कर सद्गुरुदेव-आचार्यश्री को समर्पित है जिसका पठन-मनन-चिन्तन कर भगवज्जन परम आनन्द का अनुभव करेंगे ।

अनुग्रहैककामः-

नेपालवास्तव्य **वासुदेवशरण उपाध्याय**

व्या. सा. वेदान्ताचार्य

प्राचार्य-

श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय

निम्बार्कतीर्थ - सलेमाबाद

मिति-चैत्र कृष्ण १३

शनिवार, वि. सं. २०६३

दिनांक १७/३/२००७

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज का

आविर्भाव एवं जन्म विवरण

आपश्री के सौवें पाटोत्सव के विशाल महामहोत्सव के अवसर पर कतिपय भक्तजनों के मानस में आपके आविर्भाव विषयक जिज्ञासा होना स्वाभाविक है, एतदर्थ आपके जन्माङ्क सहित जन्म विवरण प्रस्तुत है ।

विक्रम संवत् १९१७ शके १८७२ मधु मास (चैत्र) कृष्णा १३ त्रयोदशी सोमवार, उत्तराभाद्रपद नक्षत्र, इष्ट ८/३३/२५, सूर्य ११/२३/४१/५५, लग्न १/२५ उत्तराभाद्रपद के प्रथम चरण में जन्म । जन्म राशि मीन, स्वामी गुरु, सहित आपका आविर्भाव जयपुर राज्यान्तर्गत चाकसू तहसील के 'पूरण की नांगल' नामक ग्राम में एक परम भागवत आदि गौड़ इन्दोरिया विप्रवंश में हुआ था । आपके पिताश्री का नाम पं० श्रीगोपालजी शर्मा गौड़ इन्दोरिया था तथा माताश्री का नाम श्रीललितादेवी था ।

जन्म कुण्डली

३ के
१
सू १२ चं बु शु
४ गु
२ मंगल
५ श
११
६
८
१०
७
९ रा

आपके जन्म समय जन्म-कालीन कुण्डली में सूर्यादि नवग्रहों की स्थिति इस प्रकार थी--

आपकी कुण्डली में शुक्र और गुरु उच्च के ग्रह हैं । शुक्र लग्नेश उच्च का होकर लाभ भवन में स्थित है । गुरु उच्च का होकर तृतीय स्थान (पराक्रम भाव) में स्थित है । व्ययेश मंगल ग्रह लग्न में स्थित होकर सप्तम भाव (स्त्रीभाव) पर अपनी पूर्ण दृष्टि से देखता है । यह पूर्ण विरक्त योग बनाता है। आपके एकादश भाव में चतुर्ग्रही योग में बुधादित्य योग भी विशेष बनता है। चन्द्र से चौथें स्थान पर केतु का होना तथा चतुर्थ भावस्थ सिंह राशि पर भाग्येश का होना ये योग उच्चस्थ पद पर आसीन होते हुए किसी के दत्तक

रूप में जाने अर्थात् (उत्तराधिकार) का योग बनाता है ।

आपके पूर्वज श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ से ही दीक्षित होते आ रहे थे । आपके पिता श्रीगोपालजी शर्मा गौड़ इन्दोरिया पीठ के तत्कालीन आचार्यप्रवर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज के शिष्य थे । आपके पिता के लघु भ्राता श्रीकिशनदासजी भी विरक्त दीक्षा लेकर श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में ही अधिकारी पद पर नियुक्त थे। इस कारण आपके परिवार का अपने गुरुद्वारे (आचार्यपीठ) में प्रायः आवागमन बना ही रहता था । परिवार में आपश्री का प्रचलित नाम श्रीबालूरामजी शर्मा था ।

एक बार आचार्यप्रवर श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्यजी महाराज ने पं० श्रीगोपालजी शर्मा के सुपुत्र श्रीबालूरामजी की जन्मकुण्डली के ग्रहों का अवलोकन किया । आपकी कुण्डली के ग्रहों की स्थिति तथा अन्य योगों को जान कर आचार्यश्री बड़े प्रभावित हुए । आचार्यश्री ने आपके माता-पिता तथा अधिकारी श्रीकिशनदासजी आदि से परामर्श कर सर्व सम्मति से आपको वैष्णवी विरक्त दीक्षा प्रदान कर श्रीबालूराम के स्थान पर ''श्रीबालकृष्णशरण'' नामकरण संस्कार कर अपने उत्तराधिकारी हेतु युवराज पद पर नियुक्त कर लिया । और वि० सं० १९६३ चैत्र कृष्ण १२ सोमवार को ४६ वर्ष की आयु में आपश्री श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ पर सिंहासनासीन हुये । आपके पाटोत्सव समारोह में शीर्षस्थ सन्त-महन्त एवं राजकीय अधिकारी वर्ग तथा असंख्य श्रद्धालु भावुक भक्तजन उपस्थित थे । यह समारोह बड़े ही उल्लास पूर्वक विविध आयोजनों के साथ साङ्गोपाङ्ग सम्पन्न हुआ । इस पाटोत्सव-समारोह का विस्तृत वर्णन आचार्यपीठस्थ स्थानीय रोकड़-बही-खातों में विधिवत् विद्यमान है ।

--पं० विश्वामित्र व्यास

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

आत्म-निवेदन

आचार्यवर्यशुभमंजुलकान्तिधारी ।
निम्बार्कतीर्थहरिमन्दिरभूविहारी ।।
सर्वेष्टदःसकलदुःखविनाशकारी ।
श्रीबालकृष्णशरणः शरणं ममास्तु ।।

विक्रम संवत् १९९४ के आषाढ मास में श्रीपुष्करराज स्थित श्रीपरशुरामद्वारा में विराजमान सौम्यस्वरूप प्रणतार्तिहर प्रातःस्मरणीय परमाराध्य श्रीमदाचार्य चरणों में उपस्थित होकर मैंने गुरुशरणागति (दीक्षा) ग्रहण की थी । तबसे श्रीचरणों की अन्तिम अवस्था के ६-७ वर्ष पर्यन्त मुझे भी आपश्री के सान्निध्य में आकर सेवा का सौभाग्य मिला ।

श्रीगुरुदेव की महिमा एवं उनकी परम कृपा का मैं कहाँ तक वर्णन करूँ यह विषय अनिर्वचनीय एवं अनुभवगम्य है ।

एक बार मैं श्रीचरणों के दर्शनार्थ श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ पहुँचा । उस समय आचार्यश्री महल में विराजमान थे । संयोगवश हस्तेड़ा एवं किशनगढ रेनवाल के विद्यावयोवृद्ध महन्त श्रीराधिकादासजी महाराज भागवत भूषण भी वहाँ पधारे हुये थे और आपश्री के पास में ही विराज रहे थे। मैंने सामने पहुँच कर ज्यों ही साष्टांग दण्डवत् प्रणाम किया त्यों ही श्रीमुख से मधुर वाणी युक्त यह शब्द सुनाई पड़ा कि 'आवो सन्तां' । मैं आश्चर्यान्वित होकर करबद्ध हो सन्मुख बैठा तो प्रसन्न मुद्रायुक्त श्रीगुरुदेव विराजमान है साथ ही आपश्री के द्वारा संकथित 'सन्त' शब्द का समर्थन करते हुये प्रसन्न मुद्रा में ही श्रीमहान्तजी महाराज ने कहा कि--क्या कहना ये तो सन्त ही हैं'' इस पर मैंने सोचा श्रीगुरुदेव के मुखारविन्द से निकला हुआ यह नाम मेरे लिये अवश्य ही परम कल्याणकारक सिद्ध होगा यह मेरा पूर्ण विश्वास है, फिर मैं इसको क्यों न अपने उपनाम में रखलूँ । श्रीगुरुदेव का शुभाशीर्वाद प्राप्त है और विद्या-वयोवृद्ध परम तपोमूर्ति महापुरुष (जिन श्रीमहान्तजी महाराज) ने

इसका समर्थन भी कर दिया है ऐसा विचार जानकर अपनी कविता आदि में इस नाम का उपयोग करने लगा ।

श्रीगुरुदेव की कृपा होने पर भगवत्कृपा तो निश्चित है ही इसमें कोई सन्देह नहीं । कुछ पद्य रचना के लिये मैंने श्रीसर्वेश्वर राधामाधव की प्रार्थना की । पद्य (भजन) तैयार होने लगे और मैंने उनकी छाप में ''सन्त सदा भज राधामाधव'' इस नाम का इस प्रकार प्रयोग किया । थोड़े ही दिनों में 'सन्तसुधा' नामक पुस्तक तैयार हो गई और अब तो वह प्रकाशित भी है ।

एक बार श्रीगुरुदेव द्वारा विद्याध्ययन के सम्बन्ध में पूछने पर मैं मेरी दयनीय स्थिति का वर्णन करने लगा । मेरे नेत्रों में अश्रु भर आये देख आपने अपना वरद हस्त मेरे मस्तक पर रक्खा और कहा--''श्रीसर्वेश्वर राधामाधव की कृपा है, भूखे नहीं रहोगे, पेट के लिये किसी से याचना नहीं करनी पड़ेगी और सभी विद्वान् आपका आदर करेंगे ।'' अतः आज जो कुछ है, श्रीगुरुदेव काही कृपा प्रसाद है ।

आज आपके उसी निम्बार्काचार्यपीठ पर विराजमान वर्तमान आचार्यश्री की भी मुझ पर जो कृपा है वह तो कहने में नहीं आती लेखनी की भी शक्ति के बाहर है । आप ही की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन ने यह जीवनवृत्त लिख दिया है । जो ''जीवनवृत्तसौरभ'' के नाम से प्रकाशित है । आशा है भक्तजन इसकी सौरभ से परम लाभान्वित होंगे ।

मिति चैत्र कृष्ण १३　　　　निवेदक--

शुक्रवार, वि. सं. २०३७　　　　**पं० गोविन्ददास 'सन्त'**

दिनांक ३/२/१९८१

समर्पण

प्रत्यहं पूजने भानोरेकदृष्ट्या च दर्शने ।
निरतं मन्त्रराजस्य जपे-होमे निरन्तरम् ॥१॥

सदा सौशील्य-सारल्य-कारुण्य-गुणसागरम् ।
दैन्यादिगुणसम्पन्नं गीतापाठपरायणम् ॥२॥

निम्बार्काचार्यमाराध्यं निम्बार्कतीर्थवासिनम् ।
श्रीबालकृष्णशरणं वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ॥३॥

तुलसीमञ्जरीयुक्तपत्राण्यष्टोत्तरं शतम् ।
सर्वेश्वरार्चने नित्यमर्पयित्वा विधानतः ॥४॥

पूर्वाचार्यान् समाराध्य प्रसादग्रहणं ततः ।
सत्सङ्गः शास्त्रमननं श्रीमतां नियमोऽभवत् ॥५॥

निम्बार्कग्रन्थमालाया पुष्पं यच्चरिताश्रितम् ।
त्रयस्त्रिंशत्तमं मञ्जु विलिख्य भावसंभृतम् ॥६॥

निम्बार्काचार्यपीठाधि-पतीनां चरणाब्जयोः ।
मया समर्प्यते भक्त्या जीवनवृत्तसौरम् ॥७॥

तिथिः
चैत्र कृ० त्रयोदशी, शुक्रवार
वि. सं.२०३७ दि. ३/२/१९८१

श्रीचरणाब्जचञ्चरीक
वात्सल्यभाजन-
सन्त गोविन्ददास

जीवनवृत्तसौरभ

श्रीराधामाधवौ वन्दे शरणागतवत्सलौ ।।
भक्ताभीष्टप्रदौ नित्यं निम्बार्कपीठराजितौ ।।१।।
श्रीसर्वेश्वरपादपद्मयुगलध्यानानुरक्तं मुदा
सारल्यादिगुणालयं जपविधौ यागेऽर्कसंदर्शने ।
राधामाधवभक्तिशास्त्रमनने तल्लीनमेवानिशं
गीतापाठपरायणं गुरुवरं श्रीबालकृष्णं भजे ।।२।।

भगवद्विभूति महापुरुषों का जीवन परम पावन उच्चतम एवं आदर्शमय होता है । उनके मङ्गलमय दर्शन, उनकी मधुर वाणी तथा उनके द्वारा भवबन्धन विनाशक सत्सङ्ग पाकर मानव में मानवता का सञ्चार होकर जीवन स्तर ऊँचा उठ जाता है । इतना ही नहीं, वह संसारासक्ति (भवबन्धन) से छूट कर भगवद्भावापत्ति रूप मोक्ष को प्राप्त कर लेता है ।

जिस वैष्णव परम्परागत सद्गृहस्थ परिवार में जिन महापुरुषों का आविर्भाव होता है तो उनके लिये शास्त्रों में बताया गया है--

कुलं पवित्रं जननी कृतार्था वसुन्धरा भाग्यवती च धन्या ।
स्वर्गस्थितास्तत्पितरोऽपिधन्या येषां कुले वैष्णवनामधेयम् ।।
(पद्मपुराण)

जिस कुल में भगवद्भक्त वैष्णव महापुरुष का प्रादुर्भाव होता है, तो उनका वह कुल तथा माता की कोंख एवं उनकी जन्मस्थली जहाँ उनका आविर्भाव हुआ है और उनके स्वर्ग स्थित समस्त पितृगण परम धन्य हैं । फिर यदि उन महापुरुषों को सम्प्रदाय परम्परागत किसी पीठ के पीठासीन होकर आचार्य (जगद्गुरु) का पद प्राप्त हो जाय, तब तो फिर उनका वह कुल परम धन्यातिधन्य ही है । इसमें कोई सन्देह नहीं ।

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति जगद्गुरु श्रीश्रीभट्टदेवाचार्यजी महाराज ने इस प्रसंग की परिपुष्टि करते हुए बताया है कि--

धनि धनि मात पिता सुत बन्धु, धनि जननी जिन गोद खिलायो।
धनि-२ चरण चलत तीरथ को, धनि गुरु जिन हरिनाम सुनायो।।

(श्रीयुगलशतक)

भगवत्कृपा भाजन (भगवद्भक्ति सम्पन्न) होने के कारण उन महापुरुषों में शान्ति, कान्ति, निर्भ्रान्ति, निर्भयता, सरलता, उदारता, भावुकता, नम्रता, सुशीलता एवं गाम्भीर्य कारुण्य तथा दैन्यादि समस्त सद्गुण स्वभावतः ही विराजमान रहते हैं । अतः किसी कवि ने कहा है--

तरवर सरवर सन्त जन, चौथा बरसे मेह ।
परमारथ के कारणे, चारों धारी देह ।।

वास्तव में उपर्युक्त ये समस्त सद्गुण हमारे प्रातः स्मरणीय परमाराध्य (परम पूज्य श्रीगुरुदेव) अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज (अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ) में पूर्ण रूपेण विद्यमान थे ।

आपका आविर्भाव विक्रम सं० १९१७ के चैत्र कृष्ण त्रयोदशी सोमवार को जयपुर राज्यान्तर्गत चाकसू तहसील के 'पूरण की नांगल' नामक ग्राम में एक परम पावन इन्दोरिया गौड़ ब्राह्मण वंश में हुआ था । आपके पिताश्री का नाम पं० श्रीगोपालजी शर्मा गौड़ ईन्दोरिया था और माताश्री का नाम श्रीललितादेवी था । आपके जन्म समय जन्मकालीन कुण्डली में सूर्यादि नव ग्रहों की स्थिति इस प्रकार थी--

शुभ सम्वत् १९१७ शके १७८२ चैत्र कृष्ण १३ त्रयोदशी सोमवार नक्षत्र उत्तरा भाद्रपद इष्ट ८/३३/२५ सूर्य ११/२३/४१/५५ लग्न १/२५ उत्तरा भाद्र पद के प्रथम चरण में जन्म । जन्म राशि मीन स्वामी गुरु । ।। शुभम् ।।

आपके माता पिता द्वारा रक्खा हुआ प्रचलित (बोलता) नाम श्रीबालूराम शर्मा था ।

जन्म कुण्डली

आपके पूर्वज श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ से ही दीक्षित होते हुए आ रहे थे। इस परम्परानुसार आपके पिता श्रीगोपालजी भी अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के तत्कालीन आचार्य प्रवर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज के शिष्य थे । इसके अतिरिक्त आपके पिताश्री के छोटे भ्राता श्रीकिशनदासजी भी विरक्त दीक्षा लेकर श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में अधिकारी पद पर नियुक्त थे । इस कारण इस परिवार का अपने श्रीगुरुद्वारे (श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ) में समय-समय पर बराबर आना-जाना बना ही रहता था ।

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ की अतिपुरातन परम्परानुसार आदिगौड़ विप्र ही बाल ब्रह्मचारी विरक्त रूप में सदा सर्वदा स्वयंपाकिता का एवं श्रीसनकादि संसेव्य भगवान् श्रीसर्वेश्वर की नित्यार्चा का दृढ़ता से मर्यादा का परिपालन करते हुए श्रीनिम्बार्काचार्यपीठासीन रहे हैं । यह आचार्यपीठ की परम्परागत परम पालनीय अक्षुण्ण मर्यादा है । जो कदापि अवहेलनीय नहीं है । स्वयंपाकिता के नियमक्रम में अस्वस्थता किंवा वृद्धावस्था आदि परिस्थितियों में यथावसर परिवर्तन किया जाना अपेक्षित हो जाता है जो स्वाभाविक है । स्वस्थ होने पर पुनः प्रायश्चितादि करके यथावत् अपने उक्त नियम को पुनः प्रारम्भ करने की परम्परा है । अति वार्द्धक्यकाल में तो प्रायः सभी नियमों में शैथिल्य आजाना स्वाभाविक धर्म है । ब्रह्मचर्यव्रत, विरक्त वैष्णव स्वरूप तो यावज्जीवन अखण्डरूपेण आचरणीय है । कदाचित् यदिआचार्यपीठ के मर्यादा विपरीत कोई कार्य दृग्गोचर हो जाय तो तत्काल उसे अविलम्ब त्याग करके पुनः पीठ मर्यादानुसार सन्मार्ग का परिपालन करे। भविष्य में होने वाले उत्तराधिकारी पीठाचार्य जो हों आचार्यपीठ के संविधान में वर्णित नियमों के अनुसार अपनी जीवनचर्या को शुद्ध आचार विचारपूर्वक दृढता से निर्वाह करे । कदाचित् इन नियमों की अवहेलना करे या मनमानी करे तो आचार्यपीठ के ट्रस्ट-संविधानानुसार ऐसी विषमावस्था में उनका समाधान करना भी अपेक्षित हो जाता है जो मर्यादित हो । अतः आचार्यपीठ की परम्परागत पुरातन शास्त्रमर्यादित परम्परा ही आचरणीय है । प्रसङ्गवशात् यह उल्लेख यहाँ प्रस्तुत करना आवश्यक समझा गया जिससे अपनी पावन परम्परा की जानकारी हो सके ।

एक बार आचार्यप्रवर श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्यजी महाराज ने पं० श्रीगोपालजी के इस होनहार बालक की जन्मकुण्डली के ग्रहों का अवलोकन किया । लग्नेश शुक्र का उच्चस्थ होकर लाभ भवन में बैठना तथा लाभेश वृहस्पति का उच्चस्थ होकर पराक्रम (तृतीय) भवन में बैठना एवं पराक्रमेश और लाभेश चन्द्र-वृहस्पति का परस्पर स्थान सम्बन्ध और मंगल का लग्न में बैठ कर सप्तम भवन को पूर्ण दृष्टि से देखना इत्यादि बलवान् ग्रह और साथ ही विरक्त योग देखकर आचार्यश्री बड़े प्रभावित हुये । पश्चात् समय पाकर आचार्यश्री ने आपके माता-पिता तथा अधिकारी श्रीकिशनदासजी आदि के सत्परामर्शानुसार सर्व सम्मति से आपको वैष्णवी विरक्त दीक्षा प्रदान कर तथा बालूराम के स्थान पर 'बालकृष्णशरण' नामकरण संस्कार कर अपने उत्तराधिकार हेतु युवराज पद पर नियुक्त कर लिया ।

इस प्रकार युवराज पद प्राप्त कर आचार्यश्री की आज्ञा से आपने श्रीधाम वृन्दावन में निवास करते साङ्गोपाङ्ग व्याकरण वेदान्तादि शास्त्रों का विधिवत् अध्ययन किया । श्रीवृन्दावन में श्रीजी की बड़ी कुञ्ज के ठाकुर श्रीआनन्दमनोहर वृन्दावनचन्द्रजी की निज मन्दिर में अर्चा-पूजा करते हुये एवं स्वयंपाकिता का दृढता से परिपालन करते हुए आपश्री ने शास्त्रों का भली प्रकार अध्ययन किया । श्रीवृन्दावन से यहाँ आचार्यपीठ (श्रीनिम्बार्क-तीर्थ) आने पर भी आपने अपने स्वाध्याय को बराबर चालू रक्खा । यहाँ पर अलवर (राज०) में लक्ष्मणगढ के निकट (ठुमरेला) ग्राम के निवासी पं० श्रीगोपीनाथजी शर्मा गौड़ से भी आपने पाणिनीय व्याकरणादि शास्त्रों का गम्भीर स्वाध्याय किया । इतना ही नहीं इस स्वाध्याय के साथ-साथ नित्यप्रति भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु भगवान् श्रीराधामाधव की सेवा-पूजा में पूर्णतया भाग लेते थे । प्राचीन परम्परानुसार श्रीसर्वेश्वर प्रभु के लिये नैवेद्य भी स्वयं निर्माण कर समर्पण कराया करते थे । प्रतिदिन व्यायाम, योगासन, प्राणायाम, मन्त्रानुष्ठान एवं नियमित-परिभ्रमण आदि आपके ये उत्तम कार्य प्रारम्भिक जीवन से ही अक्षुण्ण रूप से चलते ही रहे ।

विक्रम संवत् १९६३ चैत्र कृ० द्वादशी सोमवार को ४६ वर्ष की अवस्था में आप श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ पर सिंहासनारूढ हुये । उक्त महोत्सव पर कई स्थानों के सन्त, महन्त एवं भक्तजन इस समारोह में सम्मिलित हुये

उनमें कतिपय स्थानाधीशों के नामों का पीठस्थ आलेख (बही-खातों) में उल्लेख इस प्रकार है--

१. हस्तेड़ा के महान्त श्रीराधिकादासजी महाराज आपके साथ अधिकारी श्रीभक्तदासजी तथा आप ही के द्वितीय स्थान किशनगढ--रेनवाल के अधिकारी वैद्यप्रवर पीयूषपाणि श्रीमाधवदासजी एवं रसोईया श्री श्रीभूरादासजी भी थे ।

२. हतुवा (बंगाल) के महान्त श्रीरघुनन्दनदासजी महाराज की ओर से भेंट दुशाला जोड़ा १ हरे रंग का नगद कलदार १००) तथा गिन्नी १।

३. उदयपुर के महान्त श्रीमाधवदासजी महाराज रोकड़ी १००) तथा दुशाला के ५०) रु. भेंट। पुजारी श्रीकान्हरदासजी ५) चित्तोड़ी भेंट।

४. अजमेर के महान्त श्रीगोविन्ददासजी श्रीनृसिंह मन्दिर होलीदड़ा की ओर से ५१) रु० भेंट । पुजारी श्रीमोतीदासजी श्रीसत्यनारायणजी का मन्दिर होलीदड़ा अजमेर ११) रु० भेंट ।

५. भरतपुर मन्दिर के पुजारी श्रीजगन्नाथदासजी १००) रु० भेंट ।

६. लीचाणा के महान्तजी की ओर से ११) रु० भेंट हस्ते गंगादासजी।

इसके अतिरिक्त और भी सन्त-महान्तों विरक्त शिष्यों तथा सद्गृहस्थ भक्तजनों द्वारा भेटें आई । विस्तार भय से उनका उल्लेख यहाँ नहीं किया गया है ।

आचार्यप्रवर श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज का वैदुष्य और सारल्य अनुपम था । श्रुति-स्मृति पुराणादि शास्त्रों, भक्ति परक ग्रन्थों तथा स्वसाम्प्रदायिक-वेदान्त-उपासना ग्रन्थों पर आपका अनुशीलन अनुपम एवं गम्भीर था । श्रीमद्भगवद्गीता तो आपश्री के कर कमलों से पृथक् ही नहीं होती थी । 'श्रीसुदर्शन कवच' आदि का पठन प्रायः चलता ही रहता था । कितने ही स्तोत्रों का मनन भी होता ही रहता था । श्रीगोपालमन्त्रराज का जाप तो प्रतिदिन अनुष्ठान के रूप में ही दशांश हवन के साथ चलता ही रहता था। सूर्य के प्रखर ताप में सभी ऋतुओं में दैनिक खड़े-खड़े श्रीमन्त्रराज का जाप क्रम एक घण्टे से भी अधिक समय तक सूर्य की ओर बिना पलक गिराये एक दृष्टि रखते हुये किया करते थे । ऐसी कठोर उपासना आपकी यावज्जीवन

चलती रही ।

वस्तुतः आपकी शान्ति, कान्ति, दयालुता, गम्भीरता इतनी महनीय थी कि जिसे स्मरण करते ही आज भी प्रत्यक्ष की भांति अनुभूति होने लगती है । इस प्रकार का महान् गुण-गरिमा पूर्ण जीवन जहाँ-तहाँ मिलना दुर्लभ है । आपके परमोच्चतम आदर्शमय जीवन से प्रभावित होकर अनेक शास्त्राचार्यों मनीषीजनों ने आपश्री के शरणापन्न हो शिष्यत्व ग्रहण किया । श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के लब्ध प्रतिष्ठ महामनीषी पण्डित प्रवर श्रीरामप्रतापजी शास्त्री (प्रोफेसर नागपुर) ब्यावर राजस्थान निवासी ने आप से शरणागति प्राप्त कर अपना परम सौभाग्य माना । पं० श्रीलाडिलीशरणजी ब्रह्मचारी न्याय-व्याकरण-काव्यतीर्थ भी आपश्री के ही शिष्य थे जो कि आचार्यपीठ के अधिकारी पद पर भी रहे । जोधपुर के महान् यशस्वी बैरिस्टर श्रीहंसराजजी सिंघवी भी आपश्री के ही कृपापात्र थे । जोधपुर-बीकानेर-बूंदी आदि उच्चतम स्टेटों (राज्यों) के राजा-महाराजा, राजरानियां, मन्त्रीगण आपश्री के शिष्य प्रशिष्य थे । मारवाड़ के प्रायः सभी जागीदार आप में परम श्रद्धा रखते हुये शरणापन्न हो होकर कृतार्थता का अनुभव करते थे ।

इसी प्रकार जब आचार्यश्री का दक्षिण यात्रा में हैदराबाद पधारना हुआ, तब हैदराबाद स्टेट के नबाब ने आपश्री की विराट् शोभायात्रा का आयोजन किया और स्वयं ने भावनायुक्त होकर अपनी श्रद्धा समर्पित की । राजस्थान निवासी सैनिक कमाण्डर श्रीहनुमानसिंहजी राठौड़ ने हैदराबाद की उस शोभायात्रा स्वागत समारोह में अतीव तत्परता से भावनायुक्त होकर अपनी सेवा प्रस्तुत की ।

आपश्री के आचार्यत्व काल में ही अजमेर राज्य के सुप्रसिद्ध ठिकाना खरवा के राव साहब श्रीगोपालसिंहजी तथा श्रीमोडसिंहजी से अजमेर राज्य के तत्कालीन कमिश्नर सा० का सेना सहित इसी आचार्यपीठ में मिलना हुआ था । कारण यह था कि दोनों ही ठाकुर महाभाग क्रान्तिकारी विचारों के थे । और देश को स्वतन्त्र बनाने हेतु अंग्रेजों से विरूद्ध हो प्रच्छन्न रूप से जहाँ-तहाँ रहते हुए अपने कार्य में पूर्ण संलग्न थे ।

ये दोनों ठाकुर महोदय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ से ही दीक्षित थे अपने इस गुरुद्वारे में इनकी बड़ी श्रद्धा भावना थी । एक दिन रात में घूमते हुये कहीं

से यहाँ आगये और यहीं रात्रि विश्राम किया । यह देख किसी गुप्तचर ने अजमेर कमिश्नर को सूचना कर दी जिससे प्रातःकाल होते-होते ही पुलिस एवं फौज के जवानों ने घोड़ों पर चढकर मन्दिर को चारों ओर से घेर लिया । यह स्थिति देख ये दोनों ठा० श्रीगोपालसिंहजी एवं श्रीमोडसिंहजी भी अपने-अपने अस्त्र-शस्त्र सम्भाल कर लड़ने को तैयार हो गये । जब आचार्यश्री को यह बात ज्ञात हुई तो ऐसा करने से उन्हें रोक दिया और कहा कि ऐसा करने से आपके इस स्थान को भारी क्षति पहुँचेगी । आप किसी प्रकार का विचार न करें भगवान् अच्छा ही करेंगे ।

इधर कमिश्नर साहब ने महाराजश्री से पूछकर भीतर आकर उनसे मिलना चाहा । तब महाराजश्री ने कहलवाया कि आप बिना शस्त्र के आवें और ये भी आपसे बिना शस्त्र ही मिलेंगे । इस पर कमिश्नर आये और महाराजश्री के माध्यम से मर्यादानुसार उनसे मिले और बातचीत कर सम्मान पूर्वक उन्हें अजमेर लाकर बाद में खरवा पहुँचा दिया ।

जब आप दोनों ठाकुर महोदय मन्दिर से चलने लगे तो अपने हथियार और ऊँट ये सब भगवान् के भेंट कर दिये थे । जिनमें से कुछ हथियार तो वर्तमान आचार्यश्री ने भारत-चीन के युद्धकाल में भारत सरकार के सुरक्षाकोष में जमा कराये थे ।

उदयपुर (मेवाड़) के हिज हाईनेस महाराणा साहब श्रीभोपालसिंहजी भी आपश्री के चरणों में अगाध निष्ठा रखते थे ।

ठिकाना कादेड़ा (अजमेर) के वर्तमान ठाकुर साहब का जन्म आपश्री के शुभाशीर्वाद का ही सत्फल है । आचार्यप्रवर की दयालुता इतनी असीम थी कि जिसका वर्णन लेखनी से व्यक्त करना कठिन है । राजस्थान में जब कभी अकाल पड़ जाता तो श्रीचरण अपने सहज दयालु स्वभाव वश कितनी ही प्रतिकूलता होने पर भी दीनों की, अनाथ असहायों की अन्न-वस्त्रादि के दान से सहायता करने में बड़े ही आनन्द का अनुभव करते थे । हमारे पीठ के कामदार स्व० श्रीजगदीशचन्द्रजी वैद्य तथा श्रीरामलालजी, जयनारायणजी जासरावत एवं श्रीकन्हैयालालजी गौड़ तथा श्रीघासीलालजी गौड़ आदि से सुना है तथा आपश्री की अन्तिम अवस्था के ५-६ वर्षों में देखा भी है कि काश्तकारों का कर अर्थात् हासिल जो बकाया चढा रहता उन्हें कामदार लोग

बुलाकर उसे प्राप्त करने के लिए डांट फटकार लगाकर उन्हें रात में बन्द कर देते थे तो एक दो रात में जब कभी मौका पाकर वे रात में जाकर महाराजश्री से प्रार्थना करते तब उनकी दयनीय दशा देख आपश्री दयावश होकर कहते कि मस्तराम दरवाजे की चाबी लेकर ताला खोलकर इनको चुपचाप बाहर कर आवो, देखना किसी को जानकारी न हो ।

दूसरे दिन उन्हें न पाकर जब कामदार प्रार्थना करने लगते तो आपश्री कहते कि उन बेचारों के पास उनके बाल-बच्चों के खाने जितना भी अन्न नहीं है तो उन्हें कहाँ से देंगे । जब होगा जब आगे दे देंगे । यह थी आपश्री की स्वाभाविकी दयालुता ।

भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु के १०८ तुलसी दलार्पण करना आपका प्रतिदिन का नियम था । कथा, सत्सङ्ग, श्रीभगवन्नाम संकीर्तन आदि सत्कार्य आपके आचार्यत्व काल में प्रतिदिन चलते ही रहा करते थे । गोशाला, संस्कृत पाठशाला, सन्त-सेवा प्रभृति पारमार्थिक कार्य भी आपके संरक्षण में सदा ही चलते रहते थे ।

विक्रम संवत् १९९४ में आपश्री के करकमलों द्वारा ही यहाँ श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय की संस्थापना हुई थी जिसके सर्वप्रथम प्रधानाध्यापक महात्मा पं० श्रीव्रजविहारीदासजी योगविशारद नियुक्त हुये थे जो आज भी श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में वर्तमान आचार्यश्री की सेवा में विद्यमान हैं । इनके पश्चात् कुछ समय पर्यन्त पं० श्रीलाडिलीशरणजी ब्रह्मचारी नियुक्त हुये तदनन्तर पं० श्रीरामेश्वरशरणजी ने अध्यापन कार्य किया । उनके पश्चात् पं० श्रीतेजपालजी शास्त्री मदनगंज (किशनगढ) ने भी महाराजश्री के आचार्यत्व काल में ही प्रधानाध्यापक पद पर कार्य किया था जो अभी विद्यमान हैं । आपश्री द्वारा संस्थापित आज उसी श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय का जो विशाल रूप दिखाई दे रहा है, जिसमें कि ७० छात्र ८ अध्यापक और शास्त्री परीक्षा पर्यन्त के अध्यापन की सुव्यवस्था है, साथ ही वर्तमान आचार्यश्री के सत्प्रयास से श्रीनिम्बार्क दर्शन विद्यालय आदि का सञ्चालन विधिवत् हो रहा है । ये संस्थाएँ भक्तजनों के सेवा सहयोग द्वारा अभिसिंचित तथा वर्तमान आचार्यश्री द्वारा संरक्षित एवं परिपालित होकर सुव्यवस्थित रूप में चल रही है । यह आपश्री के शुभाशीर्वाद का ही सत्फल है ।

अनेक विद्वान् आपके सान्निध्य में आनन्द का अनुभव करते थे । श्री वृन्दावन निवासी निम्बार्क सम्प्रदाय के परम मनीषी विद्वद्वरेण्य पं० श्री अमोलकरामजी शास्त्री तर्कतीर्थ तर्क वागीश, पं० श्रीवैष्णवदासजी शास्त्री जो कि दोनों ही महानुभाव न्याय-दर्शन शास्त्र के बड़े भारी प्रकाण्ड विद्वान् थे, आपकी पुनीत सेवा में अनेकों बार यात्राओं में साथ रहा करते थे । पं० श्रीविहारीदासजी (त्यागीजी) तो आचार्यपीठ में आपश्री की सन्निधि में बहुत बार रहे हैं । विद्या वयोवृद्ध श्रीरमादत्तजी शास्त्री साहित्याचार्य का अभी गत वर्ष पूर्व ही दिल्ली से एक पत्र आया था, जिसमें उन्होंने श्रीचरणों की महिमा एवं गुरु गरिमा का भावाश्रुपूर्ण नेत्रों से बड़ा ही मोहक वर्णन किया है।

आपश्री की स्वाभाविक सरलता का जितना ही वर्णन किया जाय अत्यल्प है । अजातशत्रुता का आप में प्रत्यक्ष दर्शन होता था । प्रतिकूलता आचरण करने वाला भी आपके सम्मुख नत मस्तक हो जाता था । कृष्णगढ नरेश महाराजा श्रीमदनसिंहजी जब भी श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ आते महाराजश्री के मंगलमय दर्शन कर अत्यधिक हर्ष का अनुभव करते थे । श्रीचरणों का जब परिभ्रमणार्थ प्रातः या अपराह्न में पधारना होता तो महाराज मदनसिंहजी स्वयं आगे बढकर अपने हाथों से श्रीचरणों को पादुका धारण करा कर परम सुखी होते थे । इसी भाँति किशनगढ नरेश श्रीयज्ञनारायणसिंहजी महाराज भी आपश्री के पादपद्मों में अपार श्रद्धा रखते थे । इस प्रकार अगणित विशिष्ट जनों द्वारा आप परिपूजित थे । आपश्री के आशीर्वाद का प्रत्यक्ष फल मिलता था । अनेक श्रद्धालु जन ने आपश्री के शुभाशीर्वाद का अनुपम लाभ प्राप्त किया । चारों धाम की यात्रायें एवं श्रीवृन्दावन कुम्भादि पर्वों पर आपका ऐतिहासिक पादार्पण बड़ा ही गौरवपूर्ण रहा है । जो कि उस समय के लिये गये चित्रों से प्रत्यक्ष अनुभव होता है ।

वि० सं० १९९४ के फाल्गुन मास में होने वाले श्रीधाम वृन्दावन के कुम्भावसर पर आपश्री का श्रीवृन्दावन पधारना हुआ उस समय अजमेरस्थ मेयोकॉलेज श्रीचारभुजा प्राचीन मन्दिर के भूतपूर्व महान्त श्रीरामकृष्णदासजी महाराज को स्थान की ओर से कुछ समय तक व्यवस्था एवं प्रबन्ध का दायित्व देकर साथ में ले गये थे । अतिरिक्त आपश्री के साथ में श्रीसर्वेश्वरजी के पुजारी श्रीरघुनाथदासजी, श्रीसर्वेश्वरदासजी, पं० श्रीदेवकीनन्दनजी कामदार

श्री वैद्य जगदीशचन्द्रजी, श्रीरामलालजी जासरावत घासीरामजी व्यास तथा श्रीवैजनाथजी शर्मा गौड़, श्रीघासीलालजी शर्मा गौड़ श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय के छात्र एवं अध्यापक पं० श्रीव्रजविहारीदासजी आदि महानुभाव थे ।

आपश्री की निजी परिचर्या (सेवा) में मस्तरामजी वैष्णव, भगवती-दास, सोहन खवास तथा भँवरलाल जासरावत आदि थे । सलेमाबादवासी छड़ीदार ठा० श्रीलखेसिंहजी तथा पुष्करनिवासी श्रीदुर्गाशंकरजी पंडा थे ।

आपश्री के मथुरा पहुँचते ही अ० भा० श्रीनिम्बार्क महासभा के प्रधानमन्त्री श्रीनन्दकुमारशरणजी साथ में अनेक सन्त-महन्त एवं सद्गृहस्थ भक्तजनों को लेकर मथुरा में स्वागतार्थ आ पहुँचे थे । मथुरा के महन्त श्रीव्रजमोहनशरणदेवजी के पूर्ण सहयोग से आपश्री के स्वागत के साथ शोभायात्रा का वह विशाल अति मनोहर दृश्य 'न भूतो न भविष्यति' वाली सदुक्ति के चरितार्थ कर रहा था ।

इसी प्रकार श्रीवृन्दावनधाम में भी अनी अखाड़ों के सन्त-महान्त, श्रीमहान्त नोबत निशानों, संकीर्तनमण्डल, जयध्वनि एवं बैण्डबाजों के साथ अपार वैष्णव जन समुदाय द्वारा स्वागत पूर्वक शोभायात्रा का अनुपम दृश्य अद्वितीय था । स्थान-स्थान पर आरती तथा जयघोष के साथ यह शोभायात्रा श्री ''श्रीजी'' महाराज की बड़ी कुञ्ज पहुँची । कुञ्ज में ही श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा सहित आपश्री का विराजना हुआ । यहाँ प्रतिदिन दर्शनार्थियों की अपार भीड़ रहती थी ।

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ से श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा सहित आपश्री का जब कभी बाहर यात्रा में पधारना होता तो किशनगढ स्टेट की पुलिस के ४ सुरक्षाकर्मी-पुलिस जवान तथा स्टेट की एक कार मय ड्राईवर के साथ रहती थी । जब तक स्टेटों का राज्य रहा तब तक ऐसी ही मर्यादा थी ।

एक दिन आपश्री की ओर से कुञ्ज में एक वृहत् रसोई (झड़ापंगत) भी बड़े समारोह के साथ हुई थी जिसमें कुम्भ मेला में स्थित महात्माओं एवं स्थानीय महात्माओं आदि के इन सभी के स्थानों पर निमंत्रण पत्र के टिकिट भेजे गये थे । उस समय कुछ ईर्षालू व्यक्तियों ने वैसे ही कृत्रिम टिकिट

बनाकर जहाँ-तहाँ और बाँट दिये थे । जब सायंकाल तक पारस लेने वालों का ताँता ही लगा रहा और टिकिटों की संख्या भी निर्धारित संख्या से बहुत अधिक बढने लगी तो व्यवस्थापकगणों ने चिन्तित होकर आपश्री से निवेदन किया । तब आपने कहा चिन्ता मत करो । श्रीसर्वेश्वर प्रभु की प्रसादी तुलसी पधरादो सब ठीक होगा टिकिट बाले महात्मा आवें उन्हें पारस दिये जावें । ऐसा ही हुआ । सब कार्य निवृत्त हो जाने पर भी बहुत प्रसाद बचा रहा जो निम्बग्राम आदि स्थानों में प्रसाद वितरण हेतु भेजा गया और कई एक पीपे भरकर श्रीनिम्बार्कतीर्थ भी प्रसाद वितरण के लिये भेजे गये । यह था आपका वाक् सिद्धि का प्रत्यक्ष प्रमाण ।

इसी शुभावसर पर अ० भा० श्रीनिम्बार्क महासभा का विशेषाधिवेशन भी बड़े समारोह के साथ सुसम्पन्न हुआ । बाहर से पधारे हुये तथा स्थानीय अनेक सन्त महान्त तथा सद्गृहस्थ भक्तजनों ने इस समारोह में भाग लिया । इस अवसर पर महाराजश्री ने संस्कृत में जो शुभाशीर्वाद दिया वह अनुवाद सहित यहाँ दिया जा रहा है ।

अखिल-भूमण्डलैकदेशिकानां सर्वतन्त्रस्वतन्त्राणां जगद्गुरूणां श्री १००८ श्रीनिम्बार्काचार्यपादपीठाधिकृतानां ''श्रीजी'' श्रीबालकष्णशरणदेवाचार्याचार्याणामाज्ञापनम्

भोः भोः !! अनादिवैदिकसत्सम्प्रदायमतानुवर्त्तिनो विद्वांसः समागत-वैष्णववृन्दाश्च ! विदितमेव तत्र भवतां यत् ब्रह्मरुद्रेन्द्रादिकिरीटकोटीडितपाद-पीठस्यानन्ताचिन्त्यस्वाभाविकशक्तिवैभवस्य सच्चिदानन्दस्वरूपस्य वेदान्तै-कज्ञेयस्य श्रीसर्वेश्वरकृष्णचन्द्रस्य चरणनलिनमकरन्दरसानुरंञ्जिता श्रीव्रजभू-मिरियम् । तत्रापि श्रीवृन्दावनभूमेः परोत्कर्षः श्रूयते सर्वत्र वेदशास्त्रेतिहासेषु ।

अनेक जन्मोपार्जितनानाविधकर्मसमुद्भूतवहुविध क्लेशतिमिरपटलेन मलिनान्तःकरणान् पुरुषान् पवित्रीकरोति स्मरणमात्रेणेयं भूमिः । व्रजरजस्पर्श-लाभार्थं स्वर्गनिवासिनोपि सततं समुत्सुका दरीदृश्यन्ते ।

सुतरां सर्वलोकैक मूर्द्धन्या । नात्रकिंचित् विप्रतिपत्तिः । तत्र निवासिनां समागतानां च भवतां श्रीसर्वेश्वरपादपद्मेषु परां भक्तिमवलोक्य प्रेमार्णवे निमज्जते मे चेतः । तत्रापि सर्वत्र द्वैताद्वैतमतप्रचारिकायाः श्रीनिम्बार्कमहासभायाः

कार्यकर्तृणां परमोत्साहं परिदृश्य जायते मे हृदि महान्सन्तोषः । अतएव भवतामुत्साहवर्धनाय किञ्चिदाज्ञाप्यते । यत् भोः भोः !! सदस्याः श्रूयतां साग्रहं में वाक्यम् । अस्मिन् करालकलिकालकवलितयुगे सर्वेपि विद्वाँसो वैष्णवाश्च स्वधर्मरक्षणाय सम्प्रदायाभ्युदयाय च परिकर-बन्धनाय सन्नद्धा भवन्तु । यतः कलौ युगे संघ एव शक्तिः ।

सर्वेपि सम्प्रदायिनः पारस्परिकं वैमनस्यमुन्मूलयितुम् चेष्टयन्तु यतः पारस्परिकं वैमनस्यमेवाधः पतनकारणम् । विश्वेस्मिन् सर्वत्र भेदाभेदमतोत्कर्षमाविष्कर्तुं पाठयन्तु बालकान् । तेषां पाठनार्थं समौचितीं व्यवस्थां कुर्वन्तु येन तत्र तत्र साम्प्रदायिकधर्मशिक्षामभ्यस्य सर्वत्र पूर्ववदनादिवैदिकसत्सम्प्रदाय विजय-वैजयन्तीमुड्डीयन्तु । किमधिकम् । प्रार्थयामि सततं श्रीसर्वेश्वरचरणकमलेषु यत्--

विद्वेषं परिहाय रागरहिताः स्नेहान्निवद्धा मिथो-
धर्मं धैर्यमुदाचरन्तु सततं सिद्धान्तवादैर्निजैः ।
सभ्याः ! शान्तियुता रताः परहिते सर्वेश्वरे सर्वदा
राधामाधवपादपद्मयुगलप्रेमास्पदाः सन्तु वै ॥

ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

भावार्थ--

अनादि वैदिक सत्सम्प्रदायमतानुवर्ति विद्वान् महानुभाव ! समागत समस्त वैष्णववृन्द ! यह तो आप सभी को विदित ही है कि ब्रजभूमि ब्रह्मरुद्रेन्द्रादिकिरीट कोटि समर्चित पादपीठ, अनन्त अचिन्त्य स्वाभाविकशक्ति वैभवशाली, सच्चिदानन्द स्वरूप वेदान्तैकवेद्य सर्वेश्वर श्रीकृष्णचन्द्र परमात्मा के युगलचरणारविन्द मकरन्दरस से निरन्तर अभिसिञ्चित है । उसमें भी श्रीवृन्दावन धाम की दिप्व्य धरणी का परम उत्कर्ष सर्वत्र वेदशास्त्र पुराणेतिहासादि ग्रन्थों में परिवर्णित है । यह भूमि अनेक जन्मोपार्जित नानाविधकर्म से समुत्पन्न बहुविध क्लेशरूपी अज्ञानान्धकारपुञ्ज द्वारा मलिन अन्तःकरण वाले जन को स्मरण मात्र से ही पवित्र करती है । इस ब्रजरज के स्पर्श लाभ के लिए स्वर्गीय देववृन्द भी निरन्तर लालायित दीखते हैं । इस परम पावन देव दुर्लभ धरित्री पर निवास करने वाले और इसके दर्शनार्थ बाहर से आये हुए आप सभी महानुभावों की श्रीसर्वेश्वर प्रभु के पादपद्मों में असीम भक्ति देखकर

हमारा मन प्रेमार्णव में निमग्न हो रहा है । उसमें भी सर्वत्र स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्त प्रचारक श्रीनिम्बार्क महासभा के कार्यकर्ताओं का परम उत्साह देखकर हमारे अन्तःकरण में और भी महान् सन्तोष हुआ । अतएव आप लोगों के उत्साह वर्द्धन हेतु कुछ विचार प्रस्तुत करते हैं । सज्जनों ! आप सावधान होकर सुनें, यह हमारा आपके प्रतिविशेष आग्रह है, इस करालकलिकाल कवलित युग में सकलशास्त्रमर्मज्ञ सभी विद्वान् एवं सतत तपःसाधन निरत वैष्णजन अपने सनातन वैदिक धर्म की रक्षा के लिए और सम्प्रदायपद्धति के अभ्युदय हेतु समवेत रूप से सदा कटिबद्ध रहें । क्योंकि कलियुग में संघ में ही शक्ति है ।

सम्प्रदाय के सभी महानुभाव पारस्परिक वैमनस्य को उन्मूल करने की चेष्टा करें । क्योंकि पारस्परिक वैमनस्य ही अधःपतन का कारण है । विश्व में सर्वत्र भेदाभेद सिद्धान्त के उत्कर्ष को बढाने हेतु बालकों को पढावे और बालकों को पढाने की समुचित व्यवस्था करें । जिससे जहाँ-तहाँ धर्म शिक्षा का अभ्यास करके पूर्ववत् सर्वत्र अनादिवैदिक सत्सम्प्रदाय की विजय वैजयन्ती फहरावे । अधिक क्या कहें । श्रीसर्वेश्वर प्रभु आप सभी को दीर्घ जीवन के साथ धर्म प्रचार प्रसार में उत्साह प्रदान करें ।

वि० सं० १९९४ के श्रीवृन्दावनधाम के कुम्भावसर पर अनी अखाड़ों के श्रीमहन्तों ने अपने हस्ताक्षरों सहित एक प्रामाणिक आलेख समर्पण किया, जिसमें यह घोषित किया कि चारों कुम्भ-महाकुम्भ नाके घाटे तथा अन्यत्र कोई वृहदायोजन आदि में हम सभी आपश्री का स्वागत करने में तत्पर रहेंगे। उनका,वह आलेख यहाँ दिया जा रहा है ।

इस शुभावसर पर पधारे हुये आपश्री का लगातार ८ मास तक बड़ी कुञ्ज श्रीवृन्दावन में ही विराजना हुआ । छात्र और अध्यापक भी आपके साथ ही रहे अर्थात् सं० १९९४ के फाल्गुन में पधारे हुये सं० १९९५ के कार्तिक मास में अन्नकूट महोत्सव वहीं पर सम्पन्न करके आपश्री का आचार्यपीठ पधारना हुआ ।

तीन धाम सप्तपुरी की यात्रा के शुभावसर पर जगन्नाथपुरी की यात्रा के सन्दर्भ में आपश्री का वर्द्धमान (बंगाल) में पधारना हुआ था । सन्त समाज एवं वर्द्धमान नरेश ने प्रजा के सहित आपश्री का अभूतपूर्व स्वागत

किया ।

कुम्भ के पूर्व वि० सं० १९९३ में आचार्यश्री का उदयपुर भी पधारना हुआ । 'स्थल' सूर्यपोल स्थान में आपका विराजना हुआ उस समय का आपश्री का म० श्रीराधिकादासजी किशनगढ-रेनवाल एवं म० श्रीगंगादासजी उदयपुर तथा अन्यान्य सन्त-महन्त महानुभाव एवं भावुक भक्तजनों के साथ लिया गया एक चित्र इस ग्रन्थ में प्रकाशित है ।

अ० भा० श्रीनिम्बार्क महासभा के प्रधानमन्त्री ब्रह्मचारी श्रीनन्द-कुमारशरणजी वृन्दावन, महान्त श्रीबलदेवदासजी महाराज ज्ञान गूदड़ी वृन्दावन, वैद्य श्रीउमाशंकरजी आदि महानुभावों की आपश्रीके प्रति अगाध निष्ठा थी ।

इसी प्रकार श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज के कृपापात्र शिष्य श्रीतत्त्वेत्ताचार्यजी महाराज जिनकी महन्त परम्परा में सर्वप्रमुख जयतारण स्थान श्रीगोपालद्वारा के महान्त श्रीजमनादासजी भी आपके श्रीचरणों में पूर्ण श्रद्धा रखते थे । जयतारण का श्रीगोपालद्वारा स्थान ही श्रीतत्त्ववेत्ताचार्यजी का प्रमुख स्थान है । अन्य जितने भी इस परम्परा के स्थान हैं वे सभी इस स्थान की शाखा-प्रशाखाओं के रूप में हैं । मेरा ही स्थान प्रमुख है, यह जो विभिन्न मनमानी धारणा करते है सर्वथा इतिहास और अक्षुण्ण पुरातन परम्परा के सर्वथा विपरीत कार्य है । विचारशील पुरुषों को इस प्रकार दुराग्रह करना अशोभनीय है ।

हस्तेड़ा, किशनगढ-रेनवाल तथा उदयपुर-स्थल के महन्त महानुभावों से तो आपश्री का अतीव आत्मीय सम्बन्ध था ।

भारत के सुप्रसिद्ध उद्योगपति सेठ श्रीजोगीराज कमलापति कानपुर वालों की माताजी भी आपश्री के चरणों में पूर्ण श्रद्धा रखती थी । आपने श्रीवृन्दावनस्थ रमणरेती परिक्रमा मार्ग के उत्तरी भाग में श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ का श्रीजी का पक्का बगीचा जो श्रीवृन्दावन में विविध लतावृक्षों से युत सर्वाधिक विशाल रूप में सुशोभित है । इस बगीचा के दक्षिणी भाग के आधे से कुछ भाग को राजकीय नियमानुसार पत्रावली आलेखादि के रूप में अपने निर्वाह हेतु कानपुर के सिंहानिया परिवार ने लिया पत्रावली में जो प्रतिज्ञायें अङ्कित हैं उसकी अनुपालना में कुछ शिथिलता है, अतः उनके अनुयायियों से सम्पर्क

किया जाना अत्यन्त अपेक्षित है ।

जब कभी आचार्यश्री का श्रीवृन्दावन धाम पधारना होता था तो श्री वृन्दावन के सुप्रसिद्ध सन्त श्रीग्वारिया बाबा आपश्री के नित्य प्रति दर्शनों के लिये आते थे और आप में बड़ी श्रद्धा रखते थे ।

वेदान्त दर्शन एवं सगीत के सुयोग्य विद्वान् महात्मा श्रीगोपालदासजी (श्रीराधासर्वेश्वर वाटिका वृन्दावन) जबकि आपश्री के समय में आचार्यपीठ में ही निवास करते थे आपश्री को प्रतिदिन पुराणों की विविध कथायें सुनाया करते थे ।

आपश्री का परिभ्रमण हेतु पैदल पधारना यह प्रतिदिन का नियम था। श्रीनिम्बार्कतीर्थ स्थलीय महल के बाहर सुरम्य सभा गोष्ठी स्थान पर विराजमान आपश्री को पं० श्रीदेवकीनन्दनजी दृष्टान्त विशारद परम मनोहर सुललित प्रेरणादायी अनेकानेक दृष्टान्त सुनाया करते थे, जिनको श्रवण कर आपश्री मन्दस्मिताानन आनन्दमग्न हो जाया करते थे । इस अवसर पर स्थानीय कतिपय व्यक्ति भी उपस्थित हो जाते थे, कथा सत्संग श्रवण का लाभ और आपश्री द्वारा जिज्ञासा करने पर अपने दुःख-सुख की बातों का निवेदन करना एवं आपश्री द्वारा प्रसङ्गों का स्वस्थ समाधान पाकर जिज्ञासुजन प्रमुदित हो जाते। इस प्रकार एक पंथ दो काज वाली सदुक्ति चरितार्थ हो जाती थी ।

आपश्री की अनेकानेक भक्तिपूर्ण एवं चमत्कार पूर्ण घटनाएँ हैं । एक सम्प्रदायाचार्य में जो विशिष्टता होनी चाहिये वह आपश्री में विद्यमान थी। श्रीपुष्करतीर्थ एवं आचार्यपीठ (श्रीनिम्बार्कतीर्थ) में बहुबार श्रीगोपाल यजन आदि बड़े सुन्दर समारोह आपके पावन सान्निध्य में सम्पन्न हुये हैं । भगवत्सेवा के निमित्त पुष्पोद्यान की दर्शनीय रचना में महाराजश्री की बड़ी ही रूचि रहा करती थी । आपश्री स्वयं अपने कर कमलों से भगवत्सेवार्थ पुष्पहार एवं पत्तल दोनों की भी विलक्षण प्रकार से रचना करते जिसे देख पार्श्ववर्त्ती जन चकित रह जाते । शास्त्रीय भक्ति संगीत श्रवण में भी आप आनन्दित हो उठते थे । श्रावण मास के झूलनोत्सव में पुजारी वर्ग के रहते हुये भी आपश्री सेवा में स्वयं पहुँच कर झूला की अद्भुत छटा (सुन्दर श्रृंगार युक्त पुष्पों की सुमनोहर झाँकी) का निर्माण कर सामने विराज कर दर्शनों का आनन्द लेते तथा झूला के पद श्रवण कर भाव विभोर हो जाते थे । इस ग्रन्थ में झूला के

समय का चित्र लिया गया है जिसका विवरण निम्न प्रकार है--

चित्र के मध्य में-श्रीराधामाधव भगवान् निज मन्दिर में विराज रहे है और जगमोहन में झूला पर श्रीसर्वेश्वर प्रभु के अनुपम दर्शनों की छटा तथा बाँई ओर श्रीबांकेबिहारीजी झूल रहे हैं । इसी प्रकार दाहिनी ओर श्रीगोकुलचन्द्रमाजी झूला पर अद्‌भुत शोभायमान हैं । मध्य खम्भे के पास दाहिने भाग में अनन्त श्रीविभूषित जगद्‌गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' श्री बालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज विराजमान हैं । मध्य में ही बांई ओर हाथ में माला लिये हुये पुजारी श्रीभँवरजी खड़े हुये हैं-बांई ओर चँवर लिये पुजारी श्रीरघुनाथदासजी हैं तथा दाहिनी ओर चँवर लिये पु० श्रीगोविन्ददासजी हैं । बाँई ओर सिढियों पर बैठे सलेमाबाद वास्तव्य पं० श्रीव्रजवल्लभजी शर्मा गौड़ हैं । नीचे चौक में मृदङ्ग वादन करते हुये कीर्तनिया चन्द्रदासजी मृदङ्गी एवं दाहिनी ओर कीर्तनिया किशनजी (कुचील वाले) बाजा पर पद गान कर रहे हैं--क्रमशः दायीं तथा बाँयी ओर छड़ी लिये अमरदासजी और सन्तदासजी खड़े हैं ।

नित्य आराधना काल में आप पद्मासन से ही विराजते थे । पद्मासन से उपासना करते हुये आपका सुमनोहर विग्रह दर्शनीय लगता था । श्रीरास-लीलानुकरण के समय रासलीलादर्शन में आप इतनी तन्मयता से खड़े-खड़े रास रस का आनन्द लेते जो देखते ही बनता था । रासलीला के समय बैठना आपको अभिप्रेत नहीं था । इन पंक्तियों के लेखक को भी इस प्रकार एक दो बार दर्शनों का सौभाग्य मिला । जब आपश्री वि० सं० १९९३ की साल में उदयपुर पधारे थे तब आपके साथ वृन्दावन के श्रीदामोदार स्वामी की रासमण्डली थी । लौटते समय लक्ष्मीनारायण मन्दिर पट्टी कटला अजमेर में विराजना हुआ । तब वहाँ रासलीला प्रारम्भ होने पर आपश्री खड़े-खड़े पूरी रासलीला पर्यन्त ऐसी वृद्धावस्था में भी नियम पूर्वक दर्शन करते थे । श्रीव्रज वृन्दावन धाम के सुप्रसिद्ध रासलीला प्रचारक स्वामी श्रीव्रजलालजी बोहरे स्वयं यहाँ श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में अपनी रासलीला मण्डली सहित एक मास से भी अधिक समय तक निवास पूर्वक श्रीचरणों की अभिलाषानुसार उनके पावन सान्निध्य में रासमण्डली द्वारा अष्टयाम सेवा प्रभृति मनोहर रास रस का आस्वादन कराते थे । रास दर्शन के समय कितनी ही वार आचार्यवर्य्य के

युगल नेत्र अश्रु पूरित हो उठते जिन्हें अवलोकन कर रसिक जन -जय जय' ध्वनि 'बलिहारी' आदि रमणीय मंगलमय वचनों का उच्चारण कर बैठते थे । वस्तुतः आपश्री की भावुकता सरसता, शान्ति प्रियता तथा त्याग परायणता अनिर्वचनीय थी ।

भगवान् श्रीराधामाधवजी के मध्य निज भागीय निज मन्दिर के चान्दी के किवाड़ों की जोड़ी आपश्री के आचार्यत्व काल में ही बनी थी ।

यद्यपि आप अपनी दिनचर्या के सभी कार्यों में समय का यथेष्ट पालन करने में पूरा-पूरा ध्यान रखते थे और संयम-नियम पूर्वक सभी कार्य करते थे तथापि जब स्वास्थ्य में कुछ विकृति होती तो वैद्यराज श्रीलक्ष्मीनारायण जी शास्त्री आयुर्वेदाचार्य अजमेर, वैद्य श्रीजगदीशचन्द्रजी निम्बार्काचार्यपीठ तथा वैद्य श्रीगोरीशंकरजी सिरोही एवं निमोल स्थान के महान्त श्रीद्वारकादासजी आदि महानुभावों के द्वारा ही उपचार करवाते थे । ये महानुभाव आपश्री के निजी वैद्यों में थे ।

आपश्री के कतिपय चमत्कारपूर्ण संस्मरण

* कई एक चमत्कार पूर्ण घटनाएँ आपश्री की देखने को मिली हैं- जैसे एक बार श्रीसर्वेश्वर संस्कृत विद्यालय जिसका प्रारम्भ ही हुआ था अभी ५-७ विद्यार्थी ही अध्ययन कर रहें थे, वे भी सबके सब चले गये तब प्रधाना-ध्यापक श्रीव्रजविहारीदासजी को बड़ी चिन्ता हुई । उस दिन उन्होंने प्रसाद भी नहीं पाया । चिन्तित अवस्था में ही अपने आसन पर लेटे हुये थे । इतने में आचार्यश्री उनके पास पहुँचे और कहा-क्यों चिन्ता कर रहे हो विद्यार्थी गये तो जाने दो और आजायेंगे । आप सत्य मानिये उसके दूसरे ही दिन और १०-१५ विद्यार्थी आगये । इस प्रकार कहा जाता है कि आपको वाक् सिद्धि थी।

* एक बार एक सन्त आपके दर्शन करने को आये । पहरेदार ने रोक दिया अभी मिलने का समय नहीं है । वे सन्त वहाँ ही रुके रहे । इस बात को आपश्री स्वतः ही जानकर द्वारपर ही पधार गये और उस सन्त का हाथ पकड़ कर अपने पास लाये और बहुतसमय तक भगवच्चर्चा करके उनको विदा किया।

* एक दिन माघ मास में पुजारी श्रीरघुनाथदासजी ने रात्रि में शयन कराने के पश्चात् भगवान् श्रीराधामाधवजी को रजाई धारण कराना भूल गये।

अतः उसी रात्रि में लगभग १२ बजे भगवान् श्रीराधामाधवजी आपश्री को स्वप्न में पधार कर कहने लगे कि आप तो रजाई ओढे सो रहे हो और हम ठंड का अनुभव कर रहे हैं । तब उसी समय आपश्री जगे, महलपार्षद मस्तरामजी को आवाज दी। श्रीव्रजविहारीदासजी को जगाकर बुलवाया, पुजारी श्रीरघुनाथदासजी को जगाकर स्नान करवाया व महाराजश्री ने स्वयं पधार कर मन्दिर खुलवाया देखा तो वास्तव में उस दिन पुजारीजी रजाई धारण करना भूल गये थे ।

* आपश्री के परमधाम वास के एक दो मास पूर्व सेठ श्रीशिवशंकरजी कामदार मेरठ का आपश्री के दर्शनार्थ आचार्यपीठ में आना हुआ था, उस समय भगवत्सेवार्थ थोड़े चाँवल भी लाये थे । सामने देखकर आपने कहा- यह खूब लाये बस यह प्रभु का महाप्रसाद हमारे जीवन में पर्याप्त है । यह सुनकर सेठजी के नेत्रों में आँसू आगये और बोले महाराज ! आप यह क्या कह रहे हैं। तब आपश्री ने कहा बस कह दिया न यह पर्याप्त है । अतः आपश्री ने मानों अपने परमधाम वास का कुछ समय पूर्व संकेत भी कर दिया था ।

* आज से ४५-४६ वर्ष पूर्व लगभग विक्रम संवत् १९९० के आस-पास की बात है--जबकि अधिकारी श्रीनरहरिदासजी अजमेर रहते थे । एक दिन अजमेर के कई एक भक्तों को पूरी बस भर कर भगवद्दर्शनार्थ एवं जागरण हेतु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ लाये । इन पंक्तियों का लेखक भी उनके साथ ही आया था । पीठ से दूसरे दिन जब अजमेर के लिये सायंकाल प्रस्थान करने लगे तब आपश्री ने आज्ञा प्रदान की कि अभी मत जावो, कल राजभोग होने पर भगवत्प्रसाद लेकर जाना । शीघ्रता में आपकी इच्छा के बिना आज्ञा लेकर प्रस्थान किया । चलते समय कुछ यात्री यहाँ की मर्यादा के विपरीत भूल से चोक में खड़ी हुई गाड़ी में ही बैठ गये । यहाँ की मर्यादा ऐसी है कि द्वार के बाहर ही यात्री गाड़ी से उतर जाते हैं और बाहर आकर ही बैठते हैं। अतः यह भी एक अपराध बन गया । गाड़ी चलकर खातोलीग्राम मे पास पहुँची तो अचानक टायर बस्ट हो गया और पेट्रोल तेल भी समाप्त हो गया । ड्राईवर इसके लिये पैदल ही किशनगढ गया । हम लोग रात के १० बजे तक जंगल में ही पड़े रहे । अकस्मात् खातोली के कु. सा. श्रीनारायणसिंहजी आगये । उनके आग्रह से हम लोगों ने खातोली के मन्दिर में रात्रि विश्राम

किया । आपश्री के वचनानुसार दूसरे दिन ही अजमेर पहुँचना हुआ । यह थी आपकी वचन सिद्धि ।

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ से भगवान् श्रीसर्वेश्वर राधामाधवजी के अन्नकूट एवं जन्माष्टमी आदि का प्रसाद जिन-जिन स्थानों के जागीरदार ठाकुर महानुभावों के यहाँ भेजा जाता था उनमें से कतिपय गाँवों की नामावली इस प्रकार है--

खारी नदी के क्षेत्र--चोसला, अरांई, भांमोलाव, ढसूक, जोरावरपुरा, कचोल्या, ढोस, उनियारा खुर्द, जूनिया, खलुंज, बघेरा, देवलिया, तिसुवारया, कालेड़ा, बोगला, गोविन्दगढ, पारा, मेरयूँ, खादेड़ा, मसूदा, फूलिया, खवास, सांकरया, प्राहेड़ा, फारक्या, केकड़ी, सरवाड़, गोठयाना ।

मारवाड़ के क्षेत्र--नेत्यास, कुल्याणा, टहला, रोहिसी, बीजाथल, रोहिसा, कुड़की, सेवरिया, बूँटी, मेसिया, हाजिवास, विराट्यां, बर्र, लीलाम्बा, आकेली, कर्मावास, निम्बेड़ा, वाँसे, देवली, राजादण्ड, वहेड़, निमोल, भिकड़राई, रामावास, घोडावट, चिरढाणी, विनावा, ओलवी, बाड़ां, बुचकला, कूड, रियां, रास, बाबरा, रायपुर, खेजड़ला, साथीण, बलुदा, समेल, निमाज, मेड़ास, आलण्यास, पीह, बाजवास, मौररा, विरोल, लोटोती, झांक, कोटड़ी, पाल्यासणी, खानपुर, नेण्या, जंजीला, बाजोली, भकरी, पालड़ी, ईड़वा, जावला, चान्दारूण, रामस्या, तोषिणा, मन्नाणा, सबलपुर, बडू, बोरावड़, गूलर ।

इन ग्रामों के ठिकानों में यहाँ से प्रतिवर्ष जन्माष्टमी एवं अन्नकूट का प्रसाद दुपट्टा आदि जाया करता था तथा समय-समय पर महाराजश्री की पधरावनियाँ भी होती रहती थी । इसके अतिरिक्त कुचामन, रिड़, मकराना, मोरेड़, जूसरी, परबतसर, रूपनगढ, भदून प्रभृति नगरों में भी कई बार आपश्री का पादार्पण हुआ ही करता था । ठिकाना पीसांगन से तो प्रतिदिन भगवान् श्रीराधामाधवजी की सेवा में माला के लिये पुष्प आया करते थे ।

भक्तों की भावनानुसार शाहपुरा एवं भीलवाड़ा आदि स्थानों में भी आपश्री का एक-एक दो-दो मास तक विराजना होता था ।

महाराजश्री की दक्षिण भारत यात्रा

(पौष शुक्ल ३ वि. सं. १६६४ को यात्रा का शुभारम्भ)

१. किशनगढ २. मदनगंज ३. अजमेर ४. भीलवाड़ा ५. मन्दसोर ६. इन्दौर ७. महू की छावनी ८. खेडीघाट ९. ओंकारनाथ १०. सनावत ११. भूसावल १२. मनमाड़ १३.जालना १४. नान्देड़ १५.हैदराबाद १६. वैजवाडा १७. मद्रास १८. मदुरा १९.रामेश्वर धाम २०. श्रीरङ्गम् २१. त्रिपुती बालाजी २२. सिकन्दराबाद २३. परभनी २४. आसेगांव २५. इंगोली २६. कमेरगोव २७. मालेगांव २८. नागडीदास २९. यातूर ३०. आकोला ३१. बोदड़ ३२. छींपावड़ ३३. सिराली ३४. मदगाँव ३५. पीपल्या ३६. मगरदा ३७. रोलगाँव ३८. खण्डवा ३९. उज्जैन ४०. रतलाम ४१. अजमेर ४२. अरड़का ४३. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ (सलेमाबाद) ।

(मिति श्रावण कृष्ण १० वि. सं. १६६५ को दक्षिण भारत यात्रा पूर्ण)

इस प्रकार श्री आचार्यवर ने ८३ वर्ष पर्यन्त इस धरातल को सुशोभित किया और श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ को ३६ वर्ष तक अलंकृत कर विक्रम संवत् २००० के ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा को प्रातः ८ बजकर ४५ मिनट पर ऐहिक लीला संवरण कर श्रीसर्वेश्वर-राधामाधव प्रभु के नित्य दिव्य चिन्मय धाम में प्रवेश किया । इहलौकिक लीला संवरण के समाचार सुनते ही भावुक श्रद्धालुजनों से सहस्रों ही की संख्या में श्रीनिम्बार्कतीर्थ की पुण्य भूमि आच्छादित हो गई थी । उन असंख्य नर नारियों के असंख्य नेत्रों से अविरल वियोगाश्रुओं की धारा से निम्बार्कतीर्थ की पवित्र धरा आर्द्र बनती जा रही थी। आचार्यश्री के चरणाश्रित शिष्य परिकर तो इस असह्य वियोगजन्य परिताप को आपश्री के अनुग्रह बल पर ही सह रहे थे ।

आचार्य चरणों ने इहलीला संवरण से पूर्व ही अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ की भावी सुव्यवस्थार्थ उत्तराधिकार पत्र (वसीयत नामा) का वर्तमान आचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज के नाम रजिस्ट्री करा दी थी जो कि आपश्री की दूरदर्शिता का स्पष्टतया परिबोधक है ।

ज्येष्ठ शुक्ल २ शनिवार वि० सं० २००० दिनांक ५/६/१९४३ का दिन चिरस्मरणीय रहेगा । इस दिन आचार्यश्रीचरणों का सतरहवीं-महोत्सव (भंडारा उत्सव) एवं वर्तमान आचार्यश्री का श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ पर पदासीन होने का महान् समारोह अनुपम दर्शनीय एवं परमाकर्षक था । इस अवसर पर

अगणित सन्त-महन्त, राजा-महाराजा, जागीरदार, सद्गृहस्थ भक्तजन उपस्थित थे । इस विराट् महोत्सव में ५०,००० पचास हजार से भी अधिक जन समूह ने भगवत्प्रसाद ग्रहण कर अपने सौभाग्य की परम सराहना की ।

आचार्यपीठासीन से पूर्व युवराज रूप में शोभायमान आपश्री प्रथम अपने स्नान, सन्ध्यावदन, मन्त्रजापादिक के अनन्तर अपार जन समूह के मध्य मन्दिर में श्रीसर्वेश्वर प्रभु, श्रीराधामाधव प्रभु, आचार्यपरम्परा, समस्त पूर्वाचार्यों के चित्रपटों के मुख्यतः श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज निम्बार्काचार्यपीठ सिंहासन तथा उसके पश्चात् परवर्ती पूर्वाचार्यों के एवं परमाराध्य श्रीगुरुदेव के चित्रपट की वैदिक विधि से समर्चना पूर्वक मन्दिर के विशाल चौक के उत्तरी प्रसादी कमरा के निकट पहले से सुसज्जित आचार्यपीठ की गद्दी-मसलन्द, दोनों ओर तकिया व्यवस्थित रूप से सुसज्जित थे । आपश्री ने स्थानीय वैदिक विद्वान् श्रीगोवर्धनजी व्यास द्वारा निर्दिष्टानुसार आचार्यपीठ का समर्चन किया मुद्रा समर्पण पूर्वक साष्टाङ्गप्रणति के साथ अपार सन्त-महन्त, विद्वान्, अगणित भक्तजनों के मध्य उस निम्बार्काचार्यपीठ पर १४ वर्ष की अल्पायु में पट्टाभिषिक्त हुए, श्रीगोवर्धनजी व्यास एवं श्रीशिवदासजी व्यास प्रभृति वैदिक कर्मकाण्डी विद्वानों ने कुशाओं दुर्वाङ्कुराओं से वैदिक शान्ति पाठ पूर्वक मन्त्रोच्चार से भव्य मंगलमय मार्जन के साथ अपार जय-जय ध्वनि से पीठाभिषेक समारोह विधिपूर्वक सम्पन्न हुआ । उपस्थित महन्त सन्तों ने साष्टाङ्ग प्रणाम पूर्वक अपनी-अपनी भेंट मुद्रा के साथ सम्मान रूप रेशमी चद्दर समर्पित किये । उस समय का परमाह्लादकारी यह दृश्य अनिर्वचनीय था । किशनगढ स्टेट की राजकीय व्यवस्था भी परम सराहनीय थी । स्टेट के दिवान साहब श्रीकेशरीसिंहजी का निर्देशन एवं व्रजविदेही वैष्णव चतुःसम्प्रदाय श्रीमहन्त श्रीधनञ्जयदासजी महाराज काठिया बाबा तर्कतर्कतीर्थ-वृन्दावन, रैनवाल महन्त श्रीराधिकादासजी, उदयपुर महन्त श्रीगंगादासजी, ठा० श्रीभैरोंसिंहजी (खेजड़ला) एवं स्थानीय चारों अधिकारी वर्ग अपार सन्त-महन्त समूह ने इस विराट् महोत्सव को बड़े उल्लास और उत्साह पूर्वक सम्पन्न कराने में अपनी-अपनी सेवायें अर्पित की। असंख्य भक्त समूह का जो अद्भुत उत्साह देखने को मिला वह अतीव वर्णनातीत है । यहाँ यह उल्लेख कर देना आवश्यक है कि जब श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के उत्तराधिकारी युवराज पीठासीन
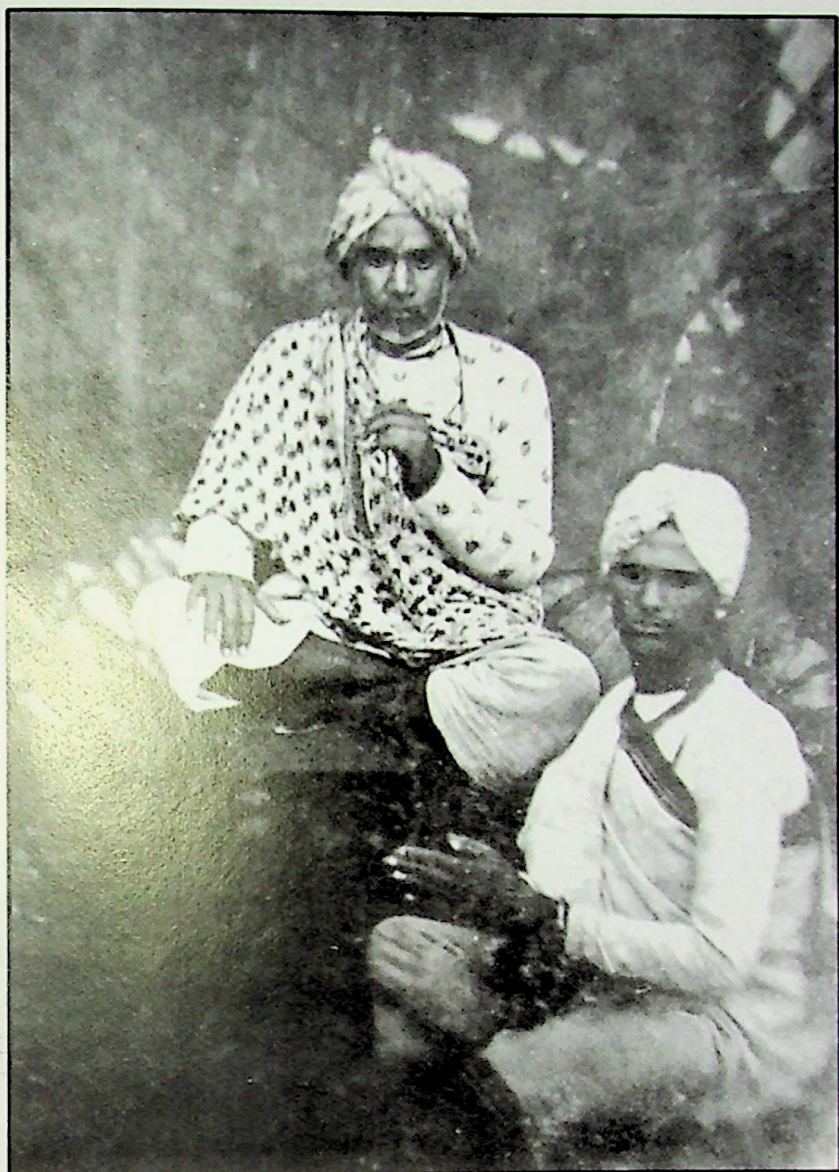
अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर·
श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज
एवं आप श्री के ही सान्निध्य में विराजमान उत्तराधिकारी
रूप में श्री बालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज
(शीतकालिक श‍ृङ्गार में)
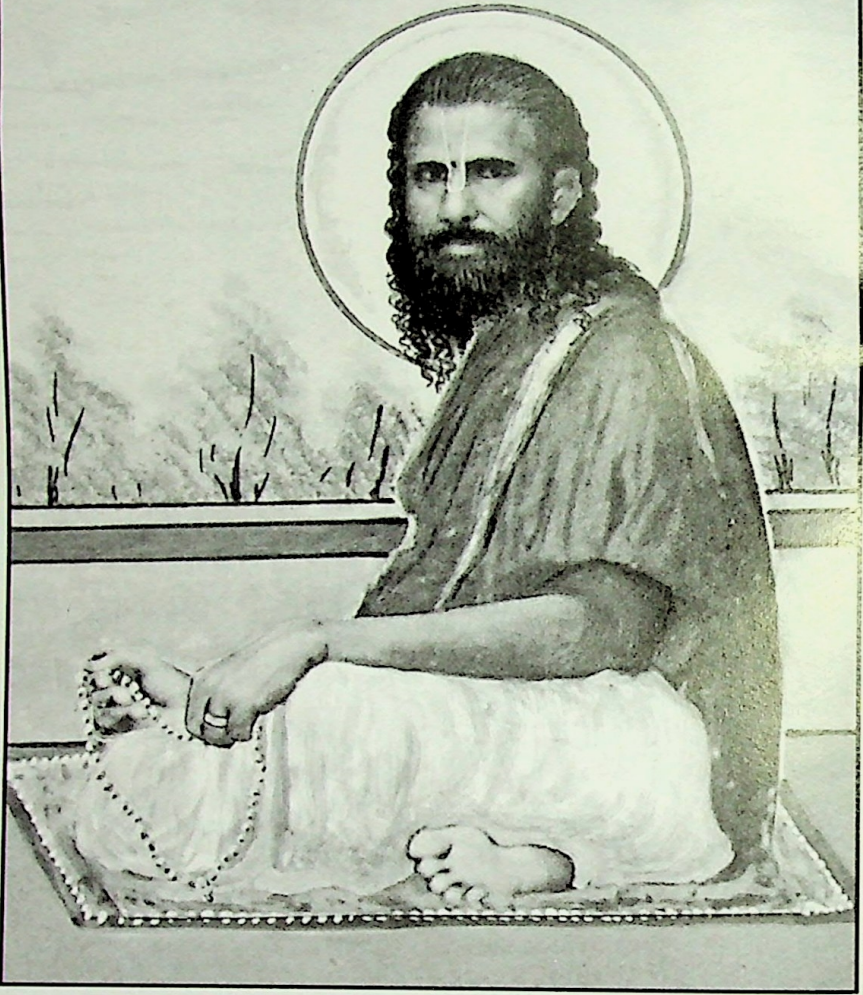
अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज
श्रीनिम्बार्कतीर्थ (सरोवर) तट पर विराजमान

मन्दिर परिक्रमा मार्ग से (शीतकालिक श्रृङ्गार में)
भगवान् श्रीसर्वेश्वर–राधामाधव प्रभु
की सेवा के लिए निज मन्दिर में पधारते हुए
युवराज रूप में श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज

उदयपुर में विराजित–

पूज्य आचार्य श्री, एवं आपके सम्मुख बैठे हुए महाराणा श्रीभोपालसिंहजी महाराज (उदयपुर) आचार्यश्री के बायें से

1. म. श्रीव्रजमोहन.शरणदेवजी मथुरा
2. अ. श्रीमनोहरदासजी बड़ीकुंज श्रीवृन्दावन
3. पं. श्रीअमोलकरामजी शास्त्री वृन्दावन
4. खड़े हुए भट्टजी (पगड़ी पहिने) उदयपुर
5. महल पार्षद श्रीमस्तरामजी वैष्णव (खड़े हुए) आप श्रीके दांई ओर बन्द छत्र के पास

वि.सं. 1994 के फाल्गुन मास में श्रीवृन्दावन के कुम्भावसर पर मथुरा में आपश्री की शोभायात्रा के अग्रिम भाग का दृश्य

श्रीवृन्दावन के कुम्भावसर पर मथुरा में आचार्यश्री की
शोभायात्रा का मनोहर दृश्य।
आपश्री बग्गी के मध्य में विराजमान एवं
आपके सन्मुख महन्त श्रीव्रजमोहनशरणदेवजी
राधाकान्त मन्दिर विश्रामघाट (मथुरा), बग्गी के
दाहिनी उस ओर अ. श्रीलाडिलीशरणजी,
पं.श्रीरामेश्वरशरणजी तथा बग्गी के इस ओर
श्रीनिम्बार्क महासभा के महामन्त्री
ब्रह्मचारी श्रीनन्दकुमारशरणजी, साफा पहने
महल पार्षद श्रीमस्तरामजी वैष्णव,
महात्मा श्रीकन्हैयादासजी
(वृन्दावन) साफा से सुशोभित रासमण्डली के
स्वामी श्रीदामोदरजी (वृन्दावन) अग्रिम भाग में साफा पहने
भक्तभूषण श्रीछगनलाल (श्रीरंगीलीशरणजी) बजाज
के सुपुत्र श्रीमोहनलालजी बजाज।

वि.सं. 1994 फाल्गुन मास वृन्दावन के कुम्भावसर
पर वृन्दावन में आपश्री की शोभायात्रा का
लिया गया अग्रिम भाग का दृश्य

वृन्दावन के ही कुम्भावसर पर लिया गया
वृन्दावन में आपश्री की शोभायात्रा का अनुपम दृश्य
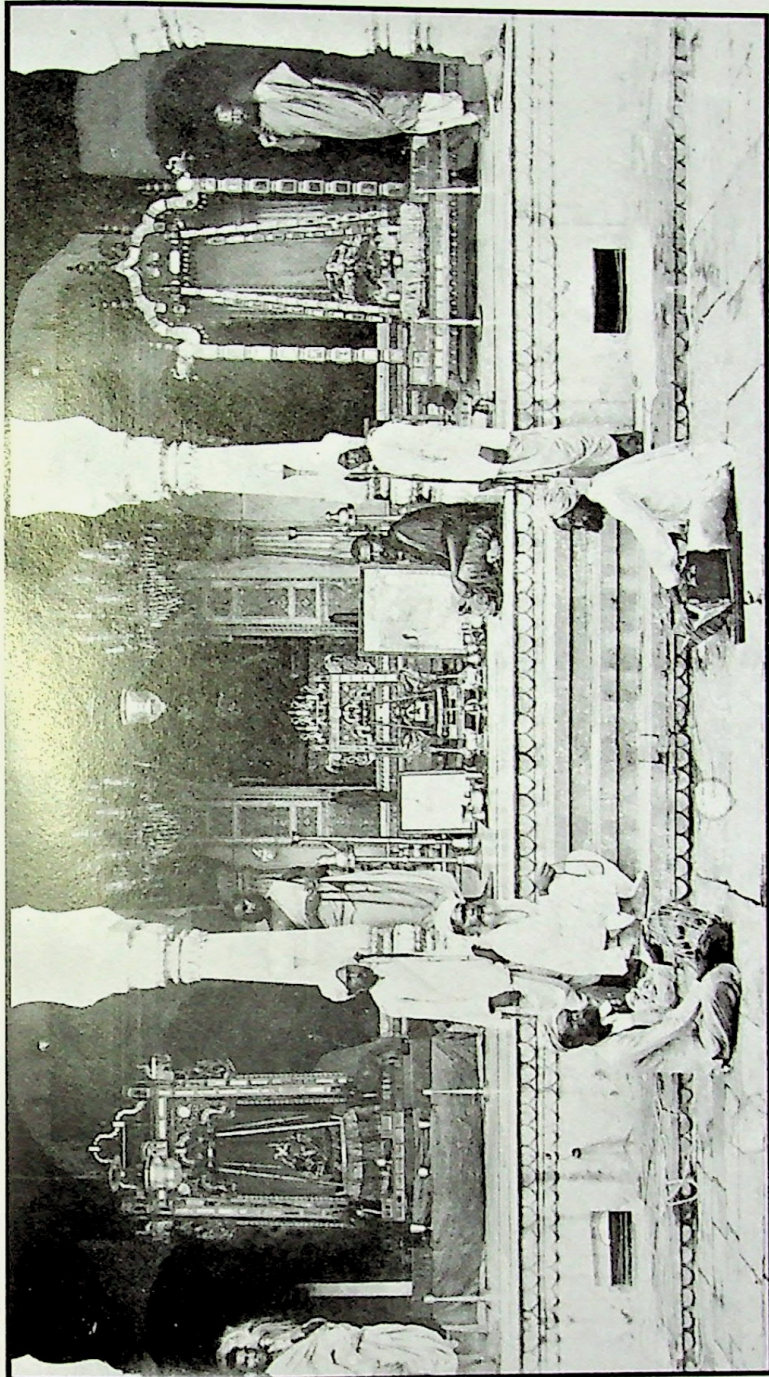
श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में भगवान् श्री सर्वेश्वर राधामाधव के झूलनोत्सव का मनोहर दृश्य
चित्र परिचय पृष्ठ 27 पक्ति 2 में वर्णित है।
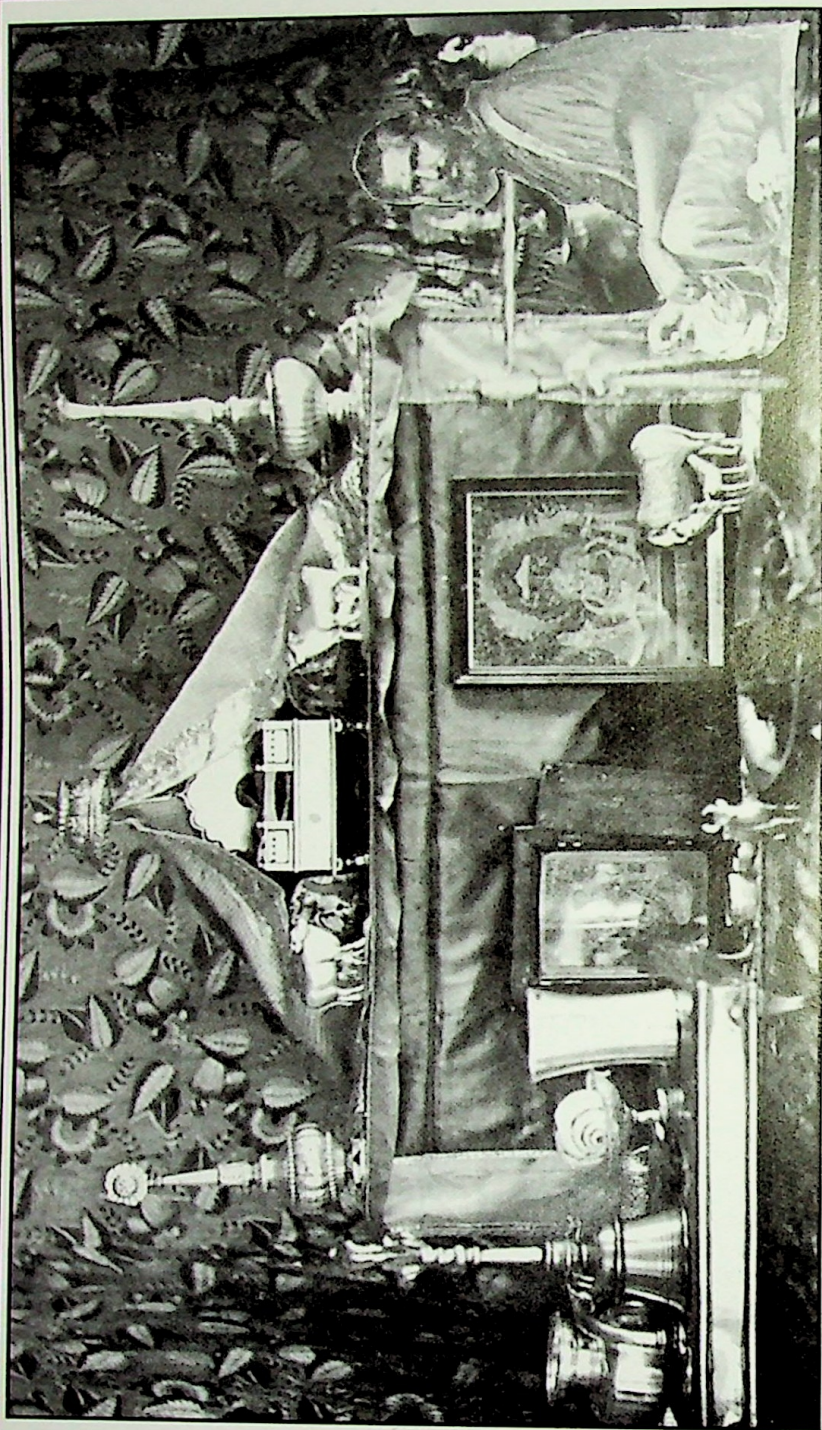
श्रीसर्वेश्वरप्रभु की सेवा में संलग्न आचार्यवर्य श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज
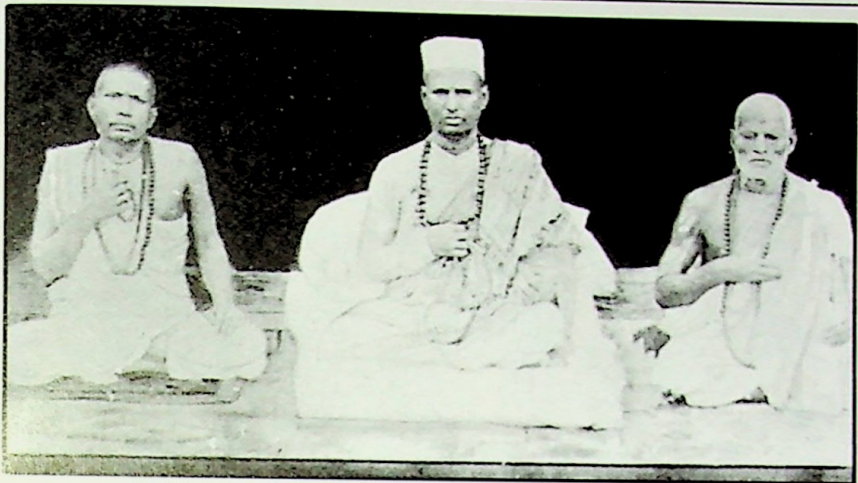
आचार्यश्री के दाहिनी ओर वर्द्धमान म. श्रीमधुसूदनशरणदेवजी
एवं बांई ओर ऊखड़ा म. श्रीरामनारायणदासजी

आचार्यश्री के दायें म. श्रीराधिकादासजी किशनगढ़ (रेनवाल)
बायें म. श्रीगंगादासजी 'स्थल' उदयपुर
तथा दोनों ओर बैठे महन्त महानुभाव

तीर्थगुरु पुष्करराज के श्रीपरशुरामद्वारा स्थान में संत–महंत–विद्वान् एवं भक्तसमूह के मध्य हवन करते हुए आचार्यप्रवर श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज
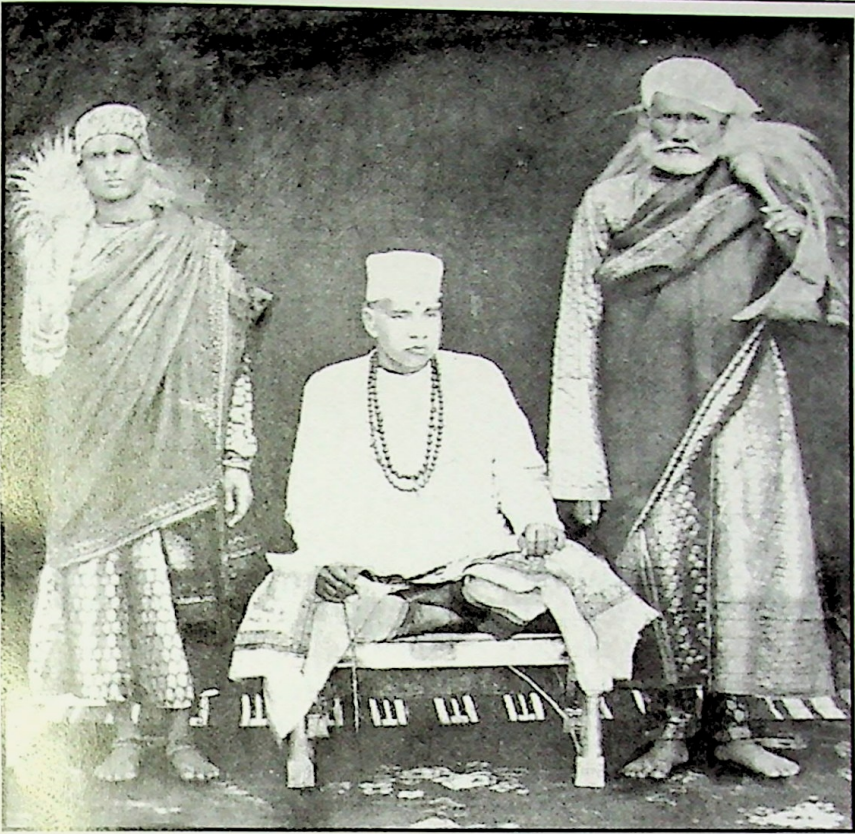
अनन्त श्रीविभूषित जगद्‌गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज
एवं बाएं खड़े उत्तराधिकारी श्रीबालकृष्णशरणदेवजी
तथा दाएं खड़े अधिकारी श्री किशनदासजी
(शीतावसर के शृङ्गार में)
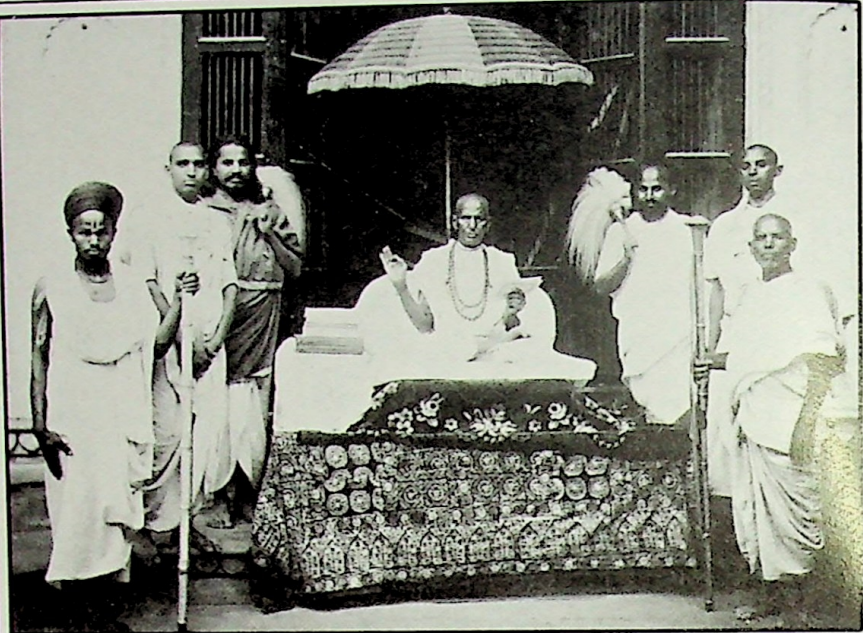
इस चित्र के मध्य में विराजमान आचार्य श्री के दाहिनी ओर छड़ी लिये खड़े हुए श्रीयमुनादासजी (वृन्दावन) पं. श्रीरामेश्वरशरणजी (वृन्दावन) चँवर लिये अ. श्रीनरहरिदासजी एवं बांई ओर चँवर लिये पं. श्रीव्रज–विहारीशरणजी, अ. ब्रजवल्लभशरणजी, छड़ी लिये पु. श्रीबलदेवदासजी
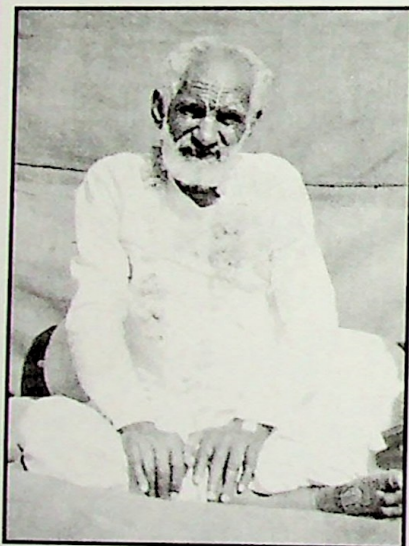
श्रीसर्वेश्वर राधामाधव प्रभु के प्रमुख पुजारी श्रीरघुनाथदासजी

अ. श्रीलाडिलीशरणजी
व्या. न्याय शास्त्री काव्यतीर्थ

अ. श्रीव्रजवल्लभशरणजी
वेदान्ताचार्य पंचतीर्थ
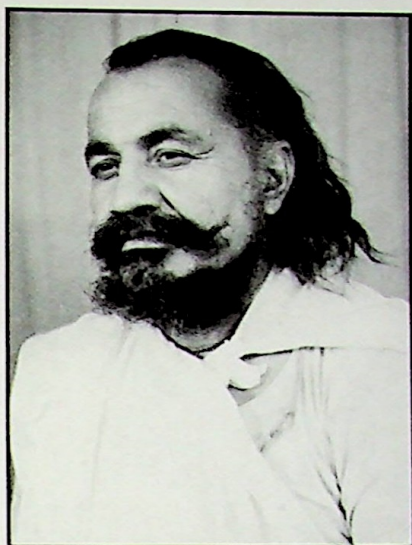
अधिकारी श्रीनरहरिदासजी

श्रीश्यामसुन्दरदास जी 'समाजी'
अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, सलेमाबाद
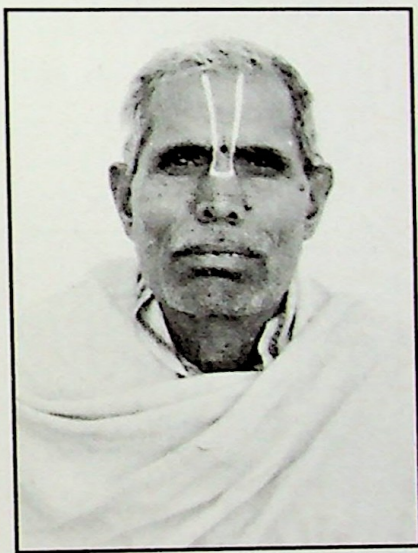
पं. श्रीगोविन्ददासजी ''सन्त''
द्वैताद्वैत विशारद, पुराणतीर्थ
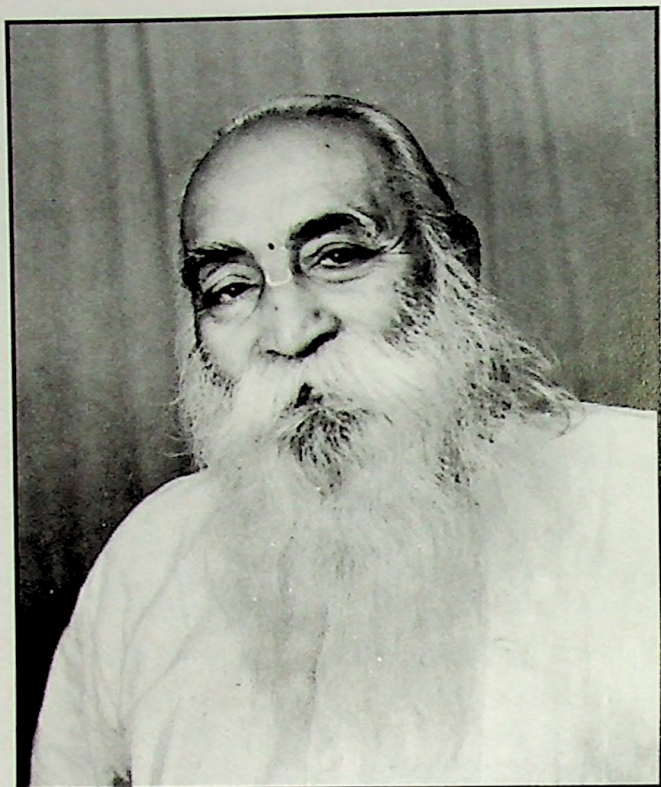
अधिकारी श्रीवियोगीविश्वेश्वरजी
(वर्तमान आचार्यश्री के कार्यकाल में वरिष्ठ प्रबन्धाधिकारी
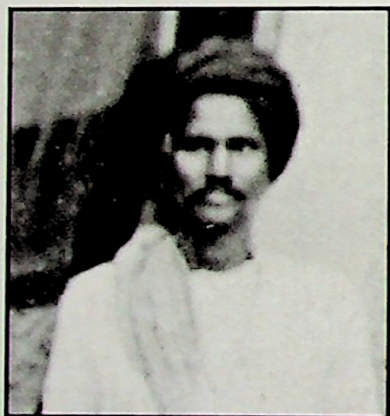
वृन्दावन श्रीजी बड़ी कुंज
की व्यवस्था में सेवारत
पण्डित श्रीरामनाथजी शर्मा
गौड इन्दौरिया (सलेमाबाद)

आचार्य श्री के कृपापात्र शिष्य विद्वद्वर
महात्मा श्रीगोपालदासजी
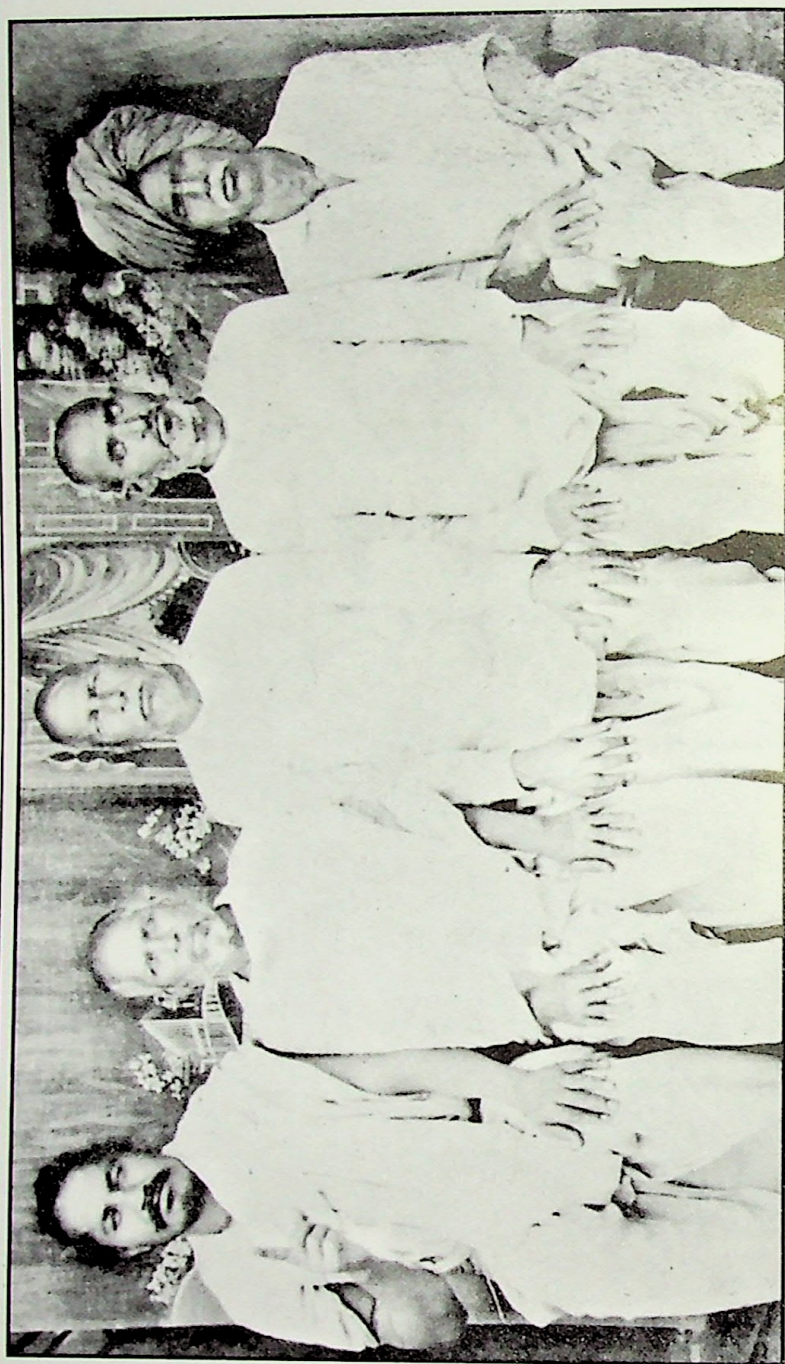
बायें से अ. नरहरिदासजी, पु. बलदेवदासजी, पं. देवकीनन्दनजी, पु. सर्वेश्वरदासजी, पं. श्यामनाथजी गोड़
(ये सभी आचार्यश्री की विविध सेवाओं में तत्परता से संलग्न थे)

बायें – सुपटा महन्त श्रीव्रजविहारीशरणजी एवं
दायें – पुजारी श्रीबालकदासजी

आचार्यश्री के मनोनीत उत्तराधिकारी श्रीराधासर्वेश्वरशरणजी
वर्तमान -

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज
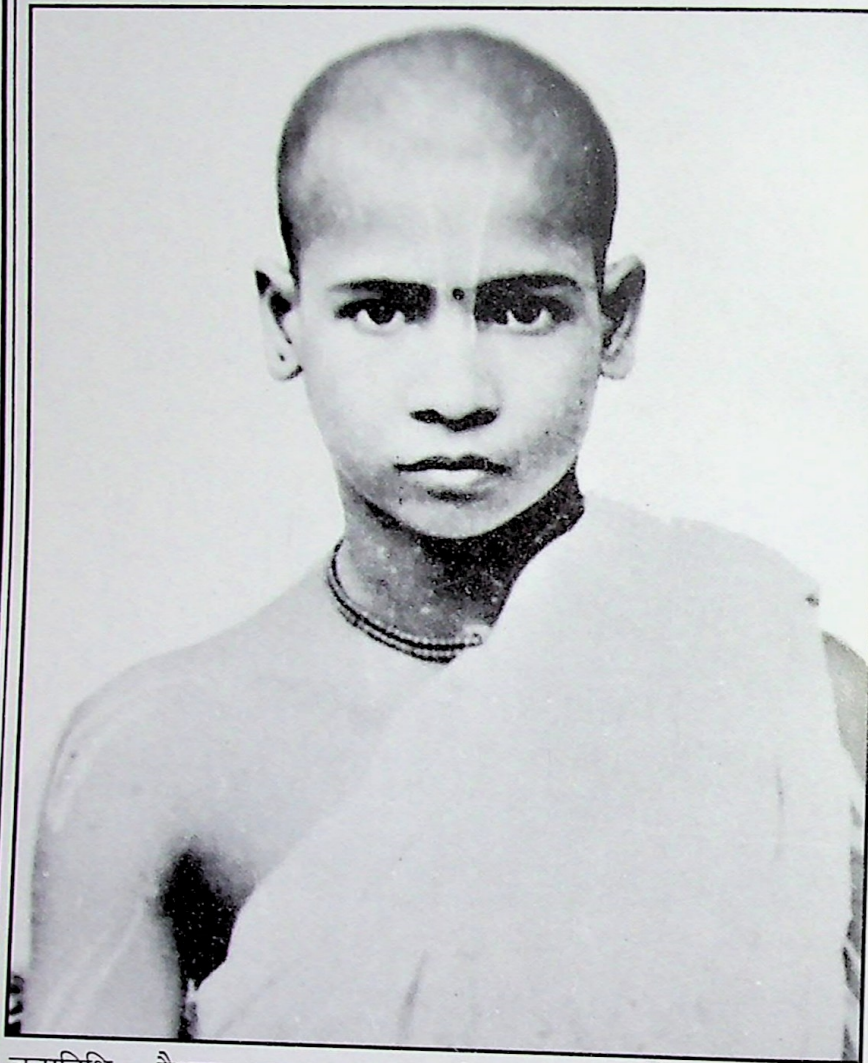
जन्मतिथि - वैशाख शुक्ला १ शुक्रवार वि.सं. १९८६ दि. १०-५-१९२९

विरक्त दीक्षा - वि.सं. १९९७ आयु ११ वर्ष, आषाढ़ शु. २ (रथयात्रा) रविवार दिनांक ७/७/१९४०

पीठासीन वि. सं. २००० ज्येष्ठ शु. द्वितीया शनिवार आयु ११ वर्ष, दि. ५/६/१९४३ ई.

हो उस समय उनका सामान्य महन्तों की भाँति उनके हस्तादिग्रहण करके गद्दी पर बिठाया जाना सर्वथा आचार्यपीठ की परम्परानुगत मर्यादा के विपरीत है। ऐसा भ्रान्तिपूर्ण आलेख किन्हीं महानुभाव ने अपने ग्रन्थ में उल्लेख करने का दुस्साहस किया है जो वह नितान्त रूपेण आचार्यपीठ की मर्यादा और परम्परा के सर्वथा विरुद्ध है । सर्वथा अमान्य है। अग्राह्य है । श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में तो उत्तराधिकारी युवराज स्वयं आचार्यपीठ की वेद विधिपूर्वक विद्वानों द्वारा अर्चना करके और आचार्यपीठ को साष्टाङ्ग प्रणाम करके मन्दिर में श्रीसर्वेश्वर राधामाधव प्रभु के साष्टाङ्ग प्रणति एवं भेंट समर्पण पूर्वक तथा समस्त पूर्वाचार्यों के पूर्ववत् प्रणाम करके उपस्थित वरिष्ठ महन्त स्थानीय अर्चक सन्तों विद्वानों के समक्ष आचार्यपीठ पर विनीत भाव से आसीन होते हैं यही अक्षुण्णरूपेण पुरातन परम्परा प्रचलित है जो भविष्य में यथावत् पालनीय होगी ।

इसी सतरहवीं महोत्सव के पावन अवसर पर वि० सं० २००० में वर्तमान आचार्यश्री के तत्वावधान में श्रीसर्वेश्वर संघ की स्थापना हुई और उसका किशनगढ स्टेट से रजिस्ट्रेशन भी हुआ, जिसके सभापति व्रजविदेही चतुःसम्प्रदाय श्रीमहन्त श्रीधनञ्ज्यजयदासजी (काठिया बाबा) तर्क-तर्क तीर्थ, उप-सभापति महन्त श्रीगंगादासजी महाराज उदयपुर, मंत्री अधिकारी श्रीव्रजवल्लभशरणजी वेदान्ताचार्य निर्वाचित हुए, जिसका एक वृहद् सम्मेलन संभवतः वि. सं. २००३ में श्रीपुष्करराज के कार्तिक मेला पर सुसम्पन्न हुआ।

आचार्यपीठ की एवं स्व-सम्प्रदाय की सर्वतोमुखी समुन्नति के लिये आपके विभिन्न महत्वपूर्ण कार्य सम्प्रदाय के इतिहास में सदा सर्वदा के लिये चिरस्मरणीय रहेंगे ।

आचार्यवर्यविरामतपः प्रकामं सर्वेश्वरार्चनरतं सरसस्वभावम् ।
सारल्य-सौम्य-करुणाकरदिव्यरूपं श्रीबालकृष्णशरणं सततं नमामि ॥

आचार्यश्री के विरक्त शिष्यों की

नामावली

१. अधिकारी श्रीगोविन्ददासजी — निम्बार्कतीर्थ
२. पुजारी श्रीकिशनदासजी — वृन्दावन

३. पुजारी श्रीसर्वेश्वरदासजी — निम्बार्कतीर्थ
४. बाबा श्रीश्यामसुन्दरदासजी — निम्बार्कतीर्थ
५. पुजारी श्रीराधिकादासजी — वृन्दावन
६. पुजारी श्रीसर्वेश्वरदासजी बी. ए. — नीमगांव
७. श्रीगोपालदासजी (भागवती) बी. ए. — वृन्दावन
८. पुजारी श्रीहरिकृष्णदासजी — लोहार्गल
९. अधिकारी श्रीलाडिलीशरणजी न्या. व्या. वे. का. तीर्थ, निम्बार्कतीर्थ
१०. सन्त श्रीघनश्यामदासजी — अजमेर-पुष्कर
११. पुजारी श्रीभँवरदासजी — निम्बार्कतीर्थ
१२. नागा श्रीघनश्यामदासजी — निम्बार्कतीर्थ
१३. ब्रह्मचारी श्रीराधेश्यामदासजी मौनी योगविशारद, छोटी कुंज, वृन्दावन
१४. महात्मा श्रीविश्वेश्वरशरणजी — वृन्दावन
१५. पुजारी श्रीश्यामदासजी ब्रजविहारीजी का मन्दिर, निम्बार्कतीर्थ

*

आपश्री की विद्यमानता में स्थानीय परिकर

अधिकारी वर्गः--

अधिकारी श्रीकिशनदासजी, श्रीविहारीदासजी, श्रीगोविन्ददासजी, श्रीमनोहरदासजी, श्रीनरहरिदासजी, श्रीलाडिलीशरणजी, श्रीव्रजवल्लभशरणजी ।

पुजारी वर्गः--

पुजारी-श्रीकिशनदासजी, (अ० श्रीविहारीदासजी के भ्राता)
श्रीकिशनदासजी, (अ० श्रीगोविन्ददासजी के भ्राता)
श्रीभँवरदासजी, श्रीरघुनाथदासजी, श्रीसर्वेश्वरदासजी, श्रीबालकदासजी, श्रीहरेकृष्णदासजी, श्रीलक्ष्मीनारायणदासजी, श्रीबलदेवदासजी ।

विद्वद्वर्गः--

पण्डित-श्रीगोपीनाथजी, पं० श्रीदेवकीनन्दनजी, पं० श्रीव्रजवल्लभ-शरणजी, पं० श्रीलाडिलीशरणजी, पं० श्रीव्रजविहारीदासजी, पं० श्रीरामेश्वरशरणजी, पं० श्रीतेजपालजी शास्त्री ।

व्यास परिकरः--

श्रीगोवर्धनजी व्यास, श्रीलादूरामजी व्यास, श्रीशिवदासजी व्यास, इस व्यास परिवार में श्रीगोवर्धनजी व्यास परम्परागत दानाध्यक्ष पदवी से मान्य रहे हैं। भगवान् के मन्दिर एवं महल में नित्य पंचांग सुनाना तथा श्रीगोपालसहस्रनाम का पाठ और धार्मिक कृत्यों में पूजन करवाना आदि आप सबों का प्रधान कार्य था । ये धर्मशास्त्र एवं ज्योतिष के श्रेष्ठ विद्वान् थे।

मुखियाः--

मुखिया-श्रीसूरजदासजी (सूरजवक्षजी) (अधिकारी श्रीविहारी-दासजी के भ्राता)

भण्डारीः--

श्रीजगन्नाथजी, श्रीलक्ष्मीनारायणजी, श्रीमोहनजी खवास ।

रसोईयाः--

श्रीरामचन्द्रजी जासरावत, श्रीछोगाजी जासरावत, श्रीकिशनजी सूंठ्या,श्रीकानजी गौड़, श्रीगोरधनजी सोंरठिया, श्रीगुलाबजी सूंठ्या, श्रीरामजीवनजी सूंठ्या, श्रीरामदेवजी व्यास, श्रीगिरधारीजी ।

महल सेवा परिकरः--

श्रीश्यामसुन्दरदासजी (बाबूजी) श्रीमस्तरामदासजी वैष्णव, श्रीभँवर-लालजी जासरावत, श्रीभगवतीदासजी वैष्णव, श्रीराधाकिशनदासजी नागा वैष्णव, श्रीश्यामनाथजी गौड़ इन्दोरिया (श्रीवैजनाथजी के

पिताश्री), श्रीरामनाथजी गौड़ इन्दोरिया (श्रीघासीरामजी गौड़ के पिताश्री) आप श्रीधामवृन्दावन की बड़ी कुंज के कामदार के रूप में भी थे । (एक श्रीसाँवलदासजी (साँवरिया बाबा) भी महाराजश्री की सन्निधि में रहा करते थे । जो रूपनगढ में आचार्यपीठ के ही जगमोहनद्वारा मन्दिर के पुजारी भी रहे हैं । इन्होंने २५ वर्ष तक व्रजवास करते हुए केवल श्रीयमुना रज का ही यमुनाजल में उसे घोलकर उसीका आहार करते हुए भगवान श्रीश्यामाश्याम की आराधना की थी।) जयपुर क्षेत्र में चाकसू नगर निकटवर्ती नागल-पूरण ग्राम के निवासी सेठ श्रीशिवनारायणजी जिन्होंने आचार्यपीठ में ही यावज्जीवन निवास किया।

कामदार वर्गः--

श्रीबालमुकुन्दजी, श्रीरामरतनजी, श्रीछबीलदासजी बोहरा, श्रीजोरा-वरमल जी महता, वैद्य श्रीजगदीशचन्द्रजी गौड़, श्रीरामलालजी जासरावत, श्रीजयनारायणजी जासरावत, श्रीघासीरामजी व्यास, श्रीकल्याणजी गौड़ और श्रीवैजनाथजी गौड़ जो श्रीवृन्दावन की बड़ी कुञ्ज में कुछ समय के लिये कामदार भी रहे हैं ।)

--ऽऽ एक संस्मरण ऽऽ--
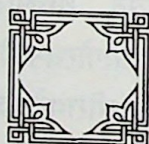
सरलता, सादगी, दयालुता की साक्षात् मूर्ति थे आचार्यश्री

(अ० श्रीव्रजवल्लभशरण वेदान्ताचार्य पंचतीर्थ)

विक्रम सं० १९८३ में यह शरीर २४ वें वर्ष में प्रविष्ट हुआ था । इसी वर्ष चला के श्रीगोपाल मन्दिर से किसी को कहे सुने बिना ही रात्रि को निकला और ३ मास तक देशाटन करता रहा । लौटकर वापिस पहुँचा तो वहाँ के सभी सज्जनों ने भक्ति भाव पूर्वक मान सम्मान किया । चला और चौकड़ी के बीच में स्थित लामियां के हनुमान मन्दिर के वयोवृद्ध महात्माओं के दिवंगत हो जाने पर एक बारह वर्षीय बालक रामदास वहाँ पूजा करता था, चौकड़ी के सेवकों ने मुझसे अनुरोध किया कि हमारे परिवार के कुछ घर नसीराबाद में हैं वे लामियां हनुमानजी के सेवक हैं, रामदास बच्चा है आप इसे साथ ले जायें तो अच्छा रहे। हनुमानजी की भोग सामग्री के लिये उनसे अच्छा आर्थिक योग मिल सकता है । उनके अनुरोध से रामदास को साथ लेकर यह शरीर नसीराबाद पहुँचा । लौटते समय आचार्यपीठ सलेमाबाद के भी दर्शन कर आयेंगे । इसी उद्देश्य से हमारी यह यात्रा हुई थी ।

उन दिनों यद्यपि मदनगंज आबाद हो चुका था, तथापि आबादी कम ही थी । मंडी भी नई ही थी, हरमाड़ा के मुकाबले की नहीं थी । सलेमाबाद जाने वाले प्रायः तिलोनिया के स्टेशन पर ही उतरते थे । लोहार्गल गोपीनाथ मन्दिर के पुजारी रामकुमारजी आदि ने आचार्यपीठ पहुँचने के लिये तिलोनिया स्टेशन पर उतरना ही हमें बतला रक्खा था अतः हम दोनों भी किशनगढ न उतर करके तिलोनिया के स्टेशन पर ही उतरे । वहाँ से पैदल ही चले क्योंकि उन दिनों मोटर बसों का चलन नहीं था । मैंने अपने चित्त में सोचा महाराजश्री के क्या भेंट करेंगे ''रिक्तपाणि र्न पश्येत् राजानं दैवतं गुरुम्'' मार्ग में डंडा थूहर बहुत देखने में आई उनकी छोटी-छोटी हरी-हरी पत्तियों को ही फलों के रूप में हम दोनों ने बटोरना शुरु किया एक सेर या सवासेर के लगभग हो गई तब साफी में गांठ बांध कर ले गये । उन दिनों आचार्यश्री कुण्ड के महल में ही विराजते थे । दर्शन किये, साष्टांग दण्डवत् कर एक रुपया और वे थूहर के फल भेंट किये ।

यह क्या हैं ? महाराजश्री ने पूछा--तब मैंने निवेदन किया ये थूहर की पत्ती हैं । इनको किस उपयोग में लिया जाय जब महाराजश्री ने पूछा तो मैंने प्रार्थना की इनका साग बन सकता है जो उदर रोगों के लिये विशेष हितकर होता

है । महाराजश्री बड़े प्रसन्न हुए, कल इनका साग बनवाकर श्रीसर्वेश्वर प्रभु के भोग लबायेंगे । परिचारक को ऐसा आदेश प्रदान किया । हम दोनों ने दण्डवत् करके मन्दिर में श्रीराधामाधव भगवान् के दर्शन किये । रात्रि में प्रसाद लेकर विश्राम किया ।

उन दिनों फलोदी वाले महन्त जमुनादासजी वहाँ ही रह रहे थे । वे अच्छे गवैया थे किन्तु हारमोनियम बाजा मुखिया सूरजबक्सजी के कमरा में (ताले अन्दर) था । अतः जमुनादासजी ने वैसे ही एक पद सुनाया । उन्हें बूंदी हनुमान मन्दिर (माजी की धर्मशाला) एवं जयतारण गोपालद्वारा इन दोनों स्थलों में से एक स्थान पर महन्त बनाने के लिये रख छोड़ा था । पण्डित देवकीनन्दनजी आदि सभी से मिलना हुआ ।

दूसरे दिन सुबह स्नानादि नित्य कर्म के अनन्तर जब राजभोग हो चुका तब साथ के व्यक्ति को तो पंक्ति में ले लिया और महाराजश्री ने मुझे कुण्ड पर बुलवा लिया । वहीं ही प्रसाद पाया । थूहर की पत्तियों की साग की महाराजश्री ने बड़ी प्रसंशा की । जब प्रसाद पाने के बाद जाने के लिये महाराजश्री से आज्ञा मांगी तो उत्तर मिला ठहरो अभी क्यों जाते हो ? यहाँ ही रहो । ''उस समय तो यहाँ ही रहो'' इस वाक्य के रहस्य का हमें कुछ भी पता नहीं चला । किन्तु चौदह वर्ष बाद वि० सं० १९९७ में वह वाक्य चरितार्थ हो गया, तभी हमें अनुभव हुआ कि आचार्यश्री का वह आदेश वास्तविक था । वह एक भविष्य वाणी थी कि तुम्हें यहाँ रहना ही होगा, वह वाक्य सरलता सादगी और दयालुता से ओत-प्रोत था । जिसका दूध अर्क (आक) के समान माना जाता है उसकी पत्तियों की भेंट अंगीकार करके उनका साग श्रीसर्वेश्वर प्रभु के अर्पण करके स्वयं महाराजश्री ने सुदामा के तन्दुलों की भांति कितने आदर पूर्वक पत्रावली पर पाया, इसी से मुझे अनुभूति हुई कि- ''सादगी सरलता और दयालुता की साक्षात् मूर्ति ही थे आचार्यश्री ।''

आचार्यश्री प्रतिदिन भगवत् प्रसाद लेते समय पत्रावली (पत्तल) का ही नित्य प्रयोग करते थे । एक विशिष्ट महन्त जो श्रीरामानन्द सम्प्रदाय के थे। आचार्यपीठ आने पर उन्होंने जब आचार्यश्री को भगवत्प्रसाद पत्तल में आरोगते हुए देखा तो वे साश्चर्य करने लगे कि जिनके पास सभी प्रकार का वैभव है जो स्वर्ण रजतपात्रों का उपयोग कर सकते हैं वे वृक्षों के पत्तों से बनी ताजा पत्तल में ही प्रतिदिन भगवत्प्रसाद लेते हैं यह आचार्यश्री के परम सरल सादा जीवन का एक अनुपम अनुकरणीय आदर्श है । जो सर्वदा सभी को प्रेरणादायी रहेगा ।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज

द्वारा प्रणीत–

* श्रीमद्--गुरुस्तवः *

निम्बार्कदेशिकपथाग्रसरं प्रसिद्धं निम्बार्कपीठपतिमाप्तमुदारचित्तम् ।
आचार्यदेवमनिशं बुधवृन्दसेव्यं श्रीबालकृष्णशरणं गुरुमाश्रयामि ।।१।।

वेदान्तसूत्र–सकलागम–तन्त्रविज्ञं गीतापुराणपठने कथने प्रवीणम् ।
आचार्यदेवमनिशं बुधवृन्दसेव्यं श्रीबालकृष्णशरणं गुरुमाश्रयामि ।।२।।

सर्वेश्वरार्चनपरं हरिभक्तिलीनं गोपालमन्त्रजपतत्परमिष्टनिष्ठम् ।
आचार्यदेवमनिशं बुधवृन्दसेव्यं श्रीबालकृष्णशरणं गुरुमाश्रयामि ।।३।।

वृन्दावने रसघने कृतदीर्घवासं राधामुकुन्दरसरासरहस्यविज्ञम् ।
आचार्यदेवमनिशं बुधवृन्दसेव्यं श्रीबालकृष्णशरणं गुरुमाश्रयामि ।।४।।

आदित्यबिम्बपरिदर्शनदत्तदृष्टिं पद्मासनेन सततं भजने प्ररूढम् ।
आचार्यदेवमनिशं बुधवृन्दसेव्यं श्रीबालकृष्णशरणं गुरुमाश्रयामि ।।५।।

सर्वार्थसिद्धिवरदं सरलं शरण्यं सर्वप्रियं सरसशान्तिमयं मनोज्ञम् ।
आचार्यदेवमनिशं बुधवृन्दसेव्यं श्रीबालकृष्णशरणं गुरुमाश्रयामि ।।६।।

श्रीयुग्मकुंजरसकेलिविलाससिन्धौ संप्लावितं रसिकभक्तसुचित्तवित्तम्।
आचार्यदेवमनिशं बुधवृन्दसेव्यं श्रीबालकृष्णशरणं गुरुमाश्रयामि ।।७।।

श्रीमन्त्रराजहवनाप्तसुमंजुसिद्धिं श्रीमज्जगद्गुरुवरं करुणापयोधिम् ।
आचार्यदेवमनिशं बुधवृन्दसेव्यं श्रीबालकृष्णशरणं गुरुमाश्रयामि ।।८।।

श्रीमद्गुरुस्तवो दिव्यो गुरुभक्तिप्रदायकः ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितः ।।९।।

नेपालवास्तव्य ''श्रीमहावाणी'' मर्मज्ञ

निकुञ्जलीलाप्रविष्ट पं० श्रीराधिकादासजी

'युगल भवन' श्रीवृन्दावन द्वारा विरचित--

श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यचरणानां

* प्रातःस्मरणस्तोत्रम् *

श्रीमद्धंस--कुलावतंस--रसिक--श्रीमद्धरिव्यास--दे--

वाचार्यानुगताग्रणी परशुरामाचार्य--पारम्परः ।

सौशील्यादिक-सद्गुणालय-घनश्यामार्य--पादाश्रितः

श्रीश्रीजीपदभूषितो विजयतामाचार्यपादः सदा ।।१।।

श्रीमद्भागवतादि-शास्त्ररसिको वेदान्त-विद्यानिधि-

द्वैताद्वैत--मतावरोध-कलनस्तन्त्रान्तराविष्टधीः ।

छेत्ता स्वाश्रित-संशयाधिपटलीं वादीभगन्डस्थलीं

वात्सल्यादि-गुणाकरः स्वजनता-संकल्पकल्पद्रुमः ।।२।।

गम्भीरार्थवती च यस्य मधुरा वाणी मनोहारिणी

दीनानुग्रहकारिणी स्वकरुणा-संसार-संतारिणी ।

यत्स्वान्तं नवनीततोऽपि मृदुलं तापे श्रुते विद्रुतं

वर्षीयः सुयशो निरस्यति तमो यद्गायतां हार्दिकम् ।।३।।

यद्गाम्भीर्यमुदीक्ष्य दीर्घमुदधि र्निश्वासमुन्मुञ्चति

दुःसह्यं परिसह्य दानपरतां दृष्ट्वा क्षमा स्तम्भते ।

संकल्पाननपेक्ष्यदाशुषममुं कल्पद्रुमो वन्दते

पात्रत्वं न विचार्य भक्तिरसदं पश्यन्हरि र्विस्मितः ।।४।।

कालिन्दीतटकल्पपादपतले श्रीरासकेलिस्थले
नृत्यन्तौ कलवेणुगानमधुरं लोलद्विभूषाम्बरम् ।
आलीनां स्वरमण्डलातिललितं श्रीराधिकामाधवौ
ध्यायन्तं हृदि चिन्तनेन वपुषा लीनं तमार्यं भजे ।।५ ।।

भृङ्गीगुञ्जरिते पिकीकुहुकिते मायूरकेकारुते
वीणाझंकृतिके शुकानुकृतिके गीतामृतापूरिते ।
श्रीवृन्दाविपिने निकुञ्जभवने श्रीमल्लतामण्डपे
राधाकृष्णरहस्यकेलिरसिकं सख्याकृतिं भावये ।।६ ।।

फुल्लेन्दीवर–चारुदीर्घनयनो माधुर्यधुर्याननो
दाहोत्तीर्णसुवर्णवर्णसुभगस्निग्धोन्नताङ्गद्युतिः ।
भीतानामभयोपदेशरचिता मुद्राढ्यहस्ताम्बुजो
नानाभूपकिरीटरत्नकिरणै नीराज्यपादाम्बुजः ।।७ ।।

श्रीगोपालमहामनोर्जपपरः सम्बद्धपद्मासनः
श्रीकुञ्जोज्ज्वलभावनासररसधीः सेवानुकूलाकृतिः ।
श्रीमन्निम्बदिनेशदेशिकमहापीठासनाधीश्वरोऽ–
नन्तश्रीयुतबालकृष्णशरणाचार्यश्चिरं नोऽवतु ।।८ ।।

अजयमेरु वास्तव्येन आशुकविना--

पं० श्रीसत्यनारायणशास्त्रिणा विरचितं--

* श्रीबालकृष्णाष्टकम् *

असन्महामोहविनाशभानुं सुबोधशैलोत्तमतुंगसानुम् ।
अन्तेवसल्लोकभवाब्धियानं श्रीबालकृष्णं गुरुवर्यमीडे ।।१।।

समस्तसंपत्तिकरं वरेण्यं प्रसादिताशेषजनं शरण्यम् ।
सदास्वधीसूरिजनाग्रगण्यं श्रीबालकृष्णं गुरुवर्यमीडे ।।२।।

अशेषतीर्थाम्बुनिभांघ्रिपद्मं प्रसन्नराकेन्दुमुखांघ्रिपद्मम् ।
विपाटितापन्नगतुंगशृंगं श्रीबालकृष्णं गुरुवर्यमीडे ।।३।।

भवाटवीभ्रान्तसुवर्त्मदं तं निर्वाणदं भूरिविभूतिदञ्च ।
आलोकदं लोकहृदन्तराले श्रीबालकृष्णं गुरुवर्यमीडे ।।४।।

विपत्तिपाथोधिगभीरतोये निमग्नपोतस्य च कर्णधारम् ।
सद्भावरत्नाकरसारधारं श्रीबालकृष्णं गुरुवर्यमीडे ।।५।।

विदीर्णमायामयमोहपाशं निजानुकम्पाखिलपूरिताशम् ।
तं सच्चिदानन्दघनप्रकाशं श्रीबालकृष्णं गुरुवर्यमीडे ।।६।।

सुखीकृताजस्रनृलोकसत्त्वं द्वन्द्वेन हीनं परिबुद्धतत्त्वम् ।
निःसारसंसारमुधामहत्त्वं श्रीबालकृष्णं गुरुवर्यमीडे ।।७।।

मायानटीनाटकसूत्रधारं सर्वं प्रपञ्चंजगतोऽस्त्यसारम् ।
इत्थं सुबोधे हरिदत्तचित्तं श्रीबालकृष्णं गुरुवर्यमीडे ।।८।।

✻ श्रीमदाचार्यस्वरूपस्तवः ✻

(रचयिता--पं० श्रीराधावल्लभ शास्त्री, कचनारिया जयपुर)

श्रीबालकृष्णशरणाभिधपारिजातं
निम्बार्कतीर्थविपिने सततं स्मरामि ।
यत्पादधूलिकणचिन्तनमात्रतोऽपि
जन्मानि वै सुमनसां सफली भवन्ति ।।१।।

श्रीबालकृष्णशरणागतिकल्पवल्ली
दुर्वासनां सुबहुजन्मभृतां धुनोतु ।
यस्याः कृपाकलितकोरक एक एव
विश्वं करोति भगवद्गुणगन्धमुग्धम् ।।२।।

वहिस्तमो रविर्हन्ति एष ह्यन्तर्गतं तमः ।
इत्थं सूर्यस्तु य पश्येत् तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।३।।

ऋद्धयो वृद्धयश्चैव सिद्धिबद्धा यदाश्रयाः ।
वि-नायकं गुरुं वन्दे सर्वलोकैकनायकम् ।।४।।

अणुव्रता भवन्त्वन्ये वसन्तु च कणव्रताः ।
वयं श्रीबालकृष्णाङ्घ्रि-सरोजे शरणव्रताः ।।५।।

* श्रीबालकृष्णशरणैकशुभंचरित्रम् *

(लेखक-पं० श्रीबदरीप्रसाद शास्त्री प्रपूर्णावास्तव्यः)

सौरत्राटकसिद्धिसाधितरमाकान्तातिशान्ता हरौ-
प्राध्वङ्कृत्य रतिं मतिं च परमाह्लादैकशक्ता विभौ ।
माधुर्यं च सखीस्वरूपसुलभं लब्धाकृतित्वं गता
वन्द्याः श्रीयुतबालकृष्णशरणाः स्वर्गौकसां देशिकाः ।।१।।
अग्निष्टोमिकपाकयज्ञिकफलान्निम्बार्कवाक्यामृते-
द्वैताद्वैतसुधालवालमिथुनब्रह्मप्रमाणात्मके ।
श्रेयः सातिशयं स्वयं स्वसमयं व्याख्याय व्याख्याय ये-
विख्याता भुवि बालकृष्णशरणा वन्देन्वहं तानहम् ।।२।।
संशीतिच्छिदुरो भवैकभिदुरो पुण्याक्षरो भासुरः
श्रीगोविन्दवचोविलासनिकरः प्रेमप्रभागत्वरः ।
पूर्वाचार्ययशःकलेवरवरः क्षेमङ्करोऽहस्करो-
रम्यः श्रीयुतबालकृष्णशरणः प्रेमप्रसादाकरः ।।३।।
निम्बार्कपीठसमधिष्ठितपादपद्मैः
श्रीवर्तमान सुरदेशिक-देशिकाग्र्यैः ।
श्रीबालकृष्णचरितं गुरुभक्तिमद्भि
मुद्राप्य लोकहितमाचरितं यशस्यम् ।।४।।
श्रीबालकृष्णशरणैकपवित्रवृत्तं
नानर्द्धिसिद्धिसदनं प्रकटं विधाय ।
श्रीवर्तमानसुरविश्वगुरुत्वयुक्तै-
र्निम्बार्क कीर्ति (कल्प) लतिकापि कृता प्रफुल्ला ।।५।।
सर्वेश्वरैकशरणैरपि राधिकाद्यैः
सार्थं र्जगद्गुरुवरैः सुरदेशिकाग्र्यैः ।
सिद्ध्या प्रसिद्धमपि वै चरितं गुरूणां
प्राकाशि हंसमतमानस-हंस-तुष्ट्यैः ।।६।।

गोविन्ददासलिखितं चरितं पवित्रं

श्रीबालकृष्णशरणाभिधदेशिकानाम् ।

गोविन्ददास–गुरु–गौरववर्णनाय–

गोविन्ददासमतिरेव भवेत्समर्था ।।७।।

सर्वेश्वरैकशरणैः स्वधिया च नाम्ना–

स्वभ्यर्हिताऽऽदिमतया रमयाऽत्रराधा ।

सिद्धैःस्तवैः स्वरचितैः प्रकटीकृतं वै–

[१]श्रीबालकृष्णशरणैकशुभं चरित्रम् ।।८।।

[२]अनन्तर्द्धिःसिद्धिः सपदि पदवीं सन्नयनयो–

र्नयोन्नेयाऽऽनेया रचयतितरा स्वस्तिक फलम् ।

कृतौ पूर्वाचार्यप्रथितचरिताम्भोजनिततौ

सदा गायं गायं रमयत मनोमत्तमधुपान् ।।९।।

विस्पष्टमष्टकमिदं भवकष्टहारि

श्लिष्टार्णकर्णकटुताविटकण्टकारि ।

विमृष्टमानसपुरोत्करपाटवानां–[३]

वृन्दाटवीविटवधूटिरतिं ददाति ।।१०।।

---

१. बाला श्रीराधा बालश्च श्रीकृष्णश्चेति बालौ एवमेव कृष्णा, श्यामा च कृष्णः श्यामश्चेति कृष्णौ बालौ च तौकृष्णौ चेति कर्मधारये बाल-कृष्णौ तौ शरणं येषां ते बालकृष्णशरण स्तेषां एकं चरित्रमिति माधुर्यपक्षे।

बलराम इत्यत्र चतुर्थादनजादौ चेतिश्लोक वार्तिकेन बल इति बल-श्चानिरुद्धादयश्चतुर्व्यूहा इत्येवं विरूपाणामपीत्येकशेष स्तेषां बलानां समूहार्थे स्वार्थे वा अणि बालात्मकश्चतु व्र्यूहात्मकः कृष्णश्चेतिशाक पर्थिवादिसमासः एवञ्च श्रीबालकृष्णःशरणं येषामिति विग्रहे ''श्रीबालकृष्णशरणा इति समासः ऐश्वर्यभक्तिपक्षे ।

२. प्रत्यक्षा उत वा अनन्ता ऋद्धिर्यस्यां सा सिद्धिः

३. सम्प्रदान विवक्षायां षष्ठी

*

✽ वन्दना ✽

निम्बार्काचार्यपीठाधिपतिपदभवैर्गौरवैरेधमानान्

शिष्यैर्भक्तैः सुधीभिर्नरपतिनिकरैरर्च्यमानान् वरेण्यान् ।।

धन्यान्मान्यान्वदान्यान्मृदुवचनसुधासेचकान् शास्त्रविज्ञान्

वन्दे श्रीजीति पूज्यान् युग-रस-रसिकान् श्रीमदाचार्यवर्य्यान् ।।

प्रातः सर्वेश्वरार्चा-जप-हवन-पराः सूर्यमुद्वीक्षमाणा

मध्याह्ने निर्निमेषं मनु-जप-निरताः स्तोत्रपाठेषु लीनाः ।।

शिष्याणां कल्पवृक्षा अतिसरलहृदो विद्यया द्योतमानाः

श्रीमद्बालादि कृष्णाः शरणपदयुता मे शरण्या भवेयुः ।।

रामगोपाल शास्त्री

जयपुर

* भाव--प्रसूनाञ्जलिः *

(रचयिता-नेपालवास्तव्य निम्बार्कभूषण पं. श्रीवासुदेवशरण उपाध्याय प्राचार्य-श्री स.सं. म. विद्यालय निम्बार्कतीर्थ)

यज्जन्मना मरुधराप्यमरावतीव

जाता प्रमोदबहुला बहुलाभपूर्णा ।।

भूभृद्वरैः परिगता परिरक्षिता च

कीर्तिं गुरोर्वितनुते भुवनेषु तस्य ।।१।।

यत्पादपद्ममकरन्दकणाश्रयेण

सद्भृङ्गवृन्दमनिशं रसलिप्सु जातम् ।।

वर्ण्येत किं तनुभृतामवरेण तस्य

श्रीमज्जगद्गुरुवरस्य महन्महत्वम् ।।२।।

यज्ञव्रतादिजपदानसमस्तकर्म

सत् शब्दवाच्यमिति यद् भगवत्प्रपन्नैः ।।

सिद्धैर्जनैरपि यथाविहितं विधेयं

कर्तृत्वतत्फलविधौ निरपेक्षभावैः ।।३ ।।

आचार्यवान् पुरुष एव तदीयतत्त्वं

जानाति नान्य इति शास्त्र विदां प्रमाणम् ।।

गीतार्थभावविदुषः स्वगुरो रसज्ञात्

श्रुत्वा यथाविधि सदा व्यदधात् यदुक्तम् ।।४ ।।

केचिच्छ्रुतिस्मृतिपुराणमुखेन लोकान्

वाण्या यथेष्टमिह बोधयितुं यतन्ते ।।

श्रीबालकृष्णशरणैस्तु सदात्मनिष्ठैः

सर्वं तथैव किल सत्क्रिययोपदिष्टम् ।।५ ।।

सद्विद्यया तरति शोकमसौ विचिन्त्य

विद्यार्थिनां हितमवेक्ष्य दयालुभिर्यः ।।

विद्यालयो विविधशास्त्रविवेचनाय

संस्थापितोऽब्धिनवखेटशशाङ्कवर्षे ।।६ ।।

सोऽयं तदीयगुणगौरवमावितन्वन्

सच्छिक्षकैर्बुधजनैर्बटुभिः प्रशस्तैः ।।

कल्पद्रुवत् सदसि पुष्पफलैरिदानीं

तान् बालकृष्णशरणान् नमतीतिहर्तन् ।।७ ।।
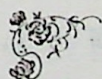
पाटोत्सव के शुभावसर पर--

--✻ मङ्गल बधाई गान ✻--

(पं० श्रीगोविन्ददास 'सन्त' धर्मशास्त्री, पुराणतीर्थ निम्बार्कभूषण)

(१)

आज दिन परम सुमङ्गल छायो ।। टेर ।।

सात-अंक-नव-चन्द्र-सुसंवत, चैत्र मास शुभ आयो ।
कृष्णपक्ष तिथि तेरस सुन्दर, सोमवार मन भायो ।।१।।
पूरण नाँगल ग्राम सुहावन, पूरण जस तू पायो ।
गौड़ वंश हरि भक्ति परायण, पावन परम सुहायो ।।२।।
श्रीगोपाल और ललिताजी, नाम अमर जस पायो ।
धन्य भाग उन मात पिताके, जिन घर सुत यह जायो ।।३।।
नन्द बाबा के नन्द-भवन में, ज्यों बालकृष्ण प्रकटायो ।
'सन्त' सदा त्यों जागत सुन्दर, रूप महा मन भायो ।।४।।

(२)

बाजत मङ्गल मोद बधाई ।। टेर ।।

मास चैत्र कृष्णा तिथि तेरस, पावन परम सुहाई ।
गुणीजन सब मिल प्रेम सों गावत, शोभा वरणि न जाई ।।१।।
श्रीबालकृष्ण पाटोत्सव लख कर, आनन्द उर न समाई ।
श्रीघनश्याम प्रमोद भयो मन, जिन यह शुभ निधि पाई ।।२।।
सब मिलि प्रेम से गाओ सुन्दर, मङ्गल मोद बधाई ।
'सन्त' सदा भज राधामाधव, सर्वेश्वर सुखदाई ।।३।।

(३)

श्रीबालकृष्ण छवि सुन्दर लागे ।। टेर ।।

चरणकमल के दरश कियेते, त्रिविध ताप अरु भव-भय भागे ।।१।।

धन्य भाग उन भक्तजनों के, जिन पर गुरु कृपा अनुरागे ।।२।।

जिन पर गुरु कृपा हो तिनके, मानों प्रबल भाग्य है जागे ।।३।।

'सन्त' सदा भज राधामाधव, चरण कमल की रति नित मांगे ।।४।।

(४)

आज सुमङ्गल घनश्याम भवन में ।। टेर ।।

तबला चंग मृदंग मंजीरा, बाजत जय ध्वनि गूंज गगन में ।।१।।

अद्‌भुत छटा प्रकृति की सुन्दर, शीतल मंद सुगन्ध पवन में ।।२।।

'सन्त' सदा भज राधामाधव, परमानन्द है ईश भजन में ।।३।।

(५)

मङ्गल मोद बधाई बाजे ।। टेर ।।

साज अनेक बजत है देखो, मधुर मधुर ध्वनि ज्यों घन गाजे ।।१।।

गुण रस अंक शशि शुभ संवत, चैत्र कृष्ण तिथि तेरस राजे ।।२।।

शुभ पाटोत्सव परम सुहावन, श्रीबालकृष्णआचारज भ्राजे ।।३।।

सौम्य स्वरूप परम अति सुन्दर, श्रीसर्वेश्वर कण्ठ विराजे ।।४।।

'सन्त' सदा भज राधामाधव, भजन विना नहीं भव भय भाजे ।।५।।

*

परमाराध्य आचार्यश्री का

पावन स्वरूप

(१)

श्रीनिम्बार्काचार्यवर, निम्बारक-पीठेश ।
जगद्गुरु श्रीबालकृष्ण-शरणदेव उपदेश ।।

(२)

श्री ''श्रीजी'' महाराज पद, कोटि साष्टाङ्ग प्रणाम ।
देवाचार्य स्वरूप हैं, अनुपम दिव्य ललाम ।।

(३)

तुलसी कण्ठी शुभ तिलक, सुशोभित शंख-चक्र ।
श्रीमद् बालकृष्णशरण-देवाचार्य नत शक्र ।।

(४)

शुभ्र वसन शोभित सदा, निजकर तुलसी माल ।
राधामाधव जपत नित, सर्वेश्वर प्रतिपाल ।।

(५)

दर्भ-पवित्रा कराङ्गुलि, पद्मासन अधिरूढ ।
सन्ध्यावन्दन, हवन, जप, गीता पाठ निगूढ ।।

(६)

नित्य मध्याह्नकाल शुभ, दिवाकर तीव्र-ताप ।
उत्थित अपलक रूप में, भास्कर दर्शन-जाप ।।

(७)

सर्वेश्वर सेवा निरत, स्वयंपाकिता कर्म ।
मन्त्रराज प्रतिदिन जपत, स्तोत्र पाठ निज धर्म ।।

(८)

अपरस में सेवा निरत, निज कर पाक विधान ।
पद्मासन शोभित सतत, तुलसी-अर्चन ध्यान ।।

(९)

गो–विप्र–प्रिय सन्तों का, होता नित सम्मान ।
दीन दुःखी जन ध्यान रत, दैन्य भाव की खान ।।

(१०)

तरु लतिका सेवा निरत, पशु–पक्षी–गजराज ।
तुरङ्ग–कुरङ्गादि वृषभ, सुपोषक महाराज ।।

(११)

वाणी में माधुर्य अति, शास्त्रों का शुभ ज्ञान ।
साधुता अति दीनता, सद्गुण–सिन्धु अमान ।।

(१२)

कृपा–दया–करुणा हृदय, शान्ति–कान्ति आगार।
षड्‌रिपुदल प्रवेश नाहि, सर्वेश्वर सञ्चार ।।

(१३)

पूर्वाचार्य सरणि परक, जीवन परम विशुद्ध ।
परम्परा–पोषक सदा, असद्–भाव विरुद्ध ।।

(१४)

श्रीचरण मुख वचन सिद्ध, शरणागत प्रतिपाल ।
अशरण शरण प्रसिद्ध है, जपत मन्त्र गोपाल ।।

(१५)

मुकुन्दमन्त्र सतत जपत, प्रतिदिन गीता पाठ ।
विविध स्तोत्र स्वाध्यायरत, सोहत वैभव ठाठ ।।

(१६)

व्रत–तीरथ–सत्संग रत, वृन्दावन–व्रज निष्ठ ।
रासलीला रसिकभूप, गायन श्रवण वरिष्ठ ।।

(१७)

श्रीनिम्बारकतीर्थ तट, राजत तरुवर बीच ।
भक्तवृन्द पूजन निरत, अरपन चन्दन कीच ।।

(१८)

श्रीगुरु–पदपङ्कज शरण, निश्चय जीवन सार ।
राधासर्वेश्वरशरण, प्रणमति बारम्बार ।।

*

मंगल मोहक मधुर बधाई ।
श्रीनिम्बारकपीठ महोत्सव, अनुपम अमृत धार बहाई ।।
निम्बारक आचार्य जगद्गुरु, जय जय उचरत जय नभ छाई ।
बालकृष्णश्रीशरणदेव हैं, आचारजवपु छवि मन भाई ।।
चैत्र कृष्ण की तेरस अतिशुभ, सोमवार दिन तिथि सुखदाई ।
विक्रम सम्वत् शुभ उन्नीसौ, तरेसठ पावन दिन दरशाई ।।
सन्त सुधीजन भक्तवृन्द भी, श्री 'श्रीजी' जय धुनि गुंजाई ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, पुनि पुनि प्रणमति पद रज पाई ।।१।।
बाजत आज बधाई सुन्दर ।
सुनि-सुनि आवत बुध वन्दीजन, पुलकित गावत वेणु बजाकर ।।
नाम उचारत बालकृष्णश्री,-शरणदेव हैं श्रीजी भास्कर ।
बाजत वीणा-मृदंग-मुरली,- भेरी-तुरयी मंजुल झांझर ।।
लै लै रसमय भोज्य पदारथ, आवत भावुक तन्मय होकर ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, यह पाटोत्सव आचारजवर ।।२।।
श्रीगुरुचरण सदा ही ध्यावो ।
कृपाकोष हैं करुणासागर, युगलचरणरज शिर पधरावो ।।
सहज दयामय शरणागतजन,-अतिहितकारी युग-रस पावो ।
वसन्त-काफी मधुर राग रस, बधाई गाकर हिय हरषावो ।।
आचारजवपु निम्बदिवाकर, कीर्तन करि-करि भक्ति बढावो ।
बालकृष्णश्रीशरणदेव हैं, जगद्गुरुवर जय जय गावो ।।
दरश मात्र सब सफल मनोरथ, शुभ अवसर है हिय सरसावो ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, मानव जीवन सफल बनावो ।।३।।
श्रीगुरु दरशन निश्चय पावो ।
निज मन निष्ठा शुद्ध भावना, पाकर अनुग्रह हिय सरसावो ।।
वे हैं अतिशय कृपा पुञ्जघन, रस बरसावे अविरल ध्यावो ।
श्रीवृन्दावननवलकुंजवन, युगललालश्री गुण-गण गावो ।।
निश्चय श्रीगुरुचरणाम्बुजरज, शिर धारण करि दुरित नशावो ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, अन्तर्मन ध्रुव अति हरषावो ।।४।।
चलो निहारो महोत्सव पावन ।
श्रीसर्वेश्वर राधामाधव, दर्शन पाकर सुख सरसावन ।।
परशुराम श्रीदेवाचारज, प्रतिपल तत्पर ताप निवारन ।
श्रीनिम्बारकतीर्थ सुपावन, नान्ह करत ही दुरित नशावन ।।
पवित्र सलिला साभ्रमती जल, मार्जन सेवन लभत मन भावन ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, यह शुभ उत्सव सकल लुभावन ।।५।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य-प्रणीतम्-

-- श्रीगुरुषोडशी-स्तोत्रम् --

पीठेशं बालकृष्णश्रीदेवाचार्यं जगद्गुरुम् ।
निम्बार्काचार्यरूपञ्च भावये निजमानसे ॥१॥

धीरं गभीरहार्दं हि लोककल्याणकारकम् ।
दीनाऽऽर्तसहयोगाय कृतयत्नं समाश्रये ॥२॥

स्वद्वैताद्वैतसिद्धान्त-सुप्रचाराय संस्थितम् ।
निम्बार्कसम्प्रदायार्थं कृतकार्यं गुरुं भजे ॥३॥

श्रुति-पुराण-तन्त्रादिसच्छास्त्रपारगं परम् ।
विद्या-विनयसम्पन्नं स्वाराध्याराधकं भजे ॥४॥

श्री-''श्रीजी'' श्रीमहाराजं जगद्वन्द्यं तपोधनम् ।
निम्बार्काचार्यपीठस्याऽऽचार्यं सद्गुरुमाश्रये ॥५॥

सर्वेश्वरार्चनाचर्यातत्परं नितरां मुदा ।
श्रीमद्भागवताख्यानवर्णने निपुणं भजे ॥६॥

तुलसीमालयाजापे स्थितञ्च तिलकाङ्कितम् ।
पद्मासनसमासीनं भावये दिव्यदर्शनम् ॥७॥

वृन्दावननिकुञ्जस्थं रासलीलारसावहम् ।
गीताशास्त्रविशेषज्ञं नमामि सिद्धिसागरम् ॥८॥

राधाकृष्णपदाम्भोजे सदानुरक्तभावनम् ।
पराभक्तिसुधासिक्तं भजामि भक्तिदायम् ॥६॥

रसब्रह्ममुकुन्दाङ्घ्रिशरणं शास्त्रसत्तमम् ।
वार्द्धक्येऽपि नित्यचर्या-पालकं सततं भजे ॥१०॥

सारल्य-दैन्य-कारुण्य-सौशील्यादिगुणाकरम् ।
गो-विप्र-साधुसेवायामर्थदं याजिनं भजे ॥११॥

मन्दिरोत्सवसत्कार्ये प्रवीणं दीनवत्सलम् ।
शुभ्रपीताम्बराच्छन्नं देदीप्यमानमाश्रये ॥१२॥

तुलसीकण्ठिकारम्यं गोपीचन्दनचर्चितम् ।
शंखं-चक्राङ्कितं चारु शरण्यं सम्भजे सदा ॥१३॥

ललाटे नित्यं तिलकं तुलसीमाल्यभूषितम् ।
कमलमालया जापे शोभितं दैनिकं भजे ॥१४॥

नित्यं व्यायामशीलञ्च नित्यं भ्रमणोत्सुकम् ।
प्राणायामसमासीनं प्राणायामपरं भजे ॥१५॥

अनन्तश्रीयुतं पूज्यं युग्मलीलासुचिन्तकम् ।
श्रेष्ठवांछितदातारं नमामि करुणामयम् ॥१६॥

श्रीगुरुषोडशी-स्तोत्रं सकलेत्सितसम्प्रदम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥१७॥

अकुण्ठं सर्व्व-कार्य्येषु धर्म्म-कार्य्यार्थमुद्यतम् ।
वैकुण्ठस्य हि तद्रूपं तस्मै कार्य्यात्मने नमः ॥

SHRI BHARAT-DHARMA-MAHAMANDAL,

requests the presence of His Holiness Shriji Maharaj of Salimabad *at its Adhivesana, to be held at the Town Hall, on the 23rd and 24th instant, at 3 p.m.*

His Highness The Hon'ble Maharaja Bahadur of Durbhanga will preside.

Pearimohan Mukhopadhyaya,
BHARATRATNA,
Raja Bahadur, M.A., B.L., C.S.I.
Adhyaksha, Shri Banga-Dharma-Mandal.

SHRI BHARAT-DHARMA-MAHAMANDAL
BANGA PRANTIYA KARYALAYA,
18, British Indian Street,
CALCUTTA, THE 10th DECEMBER, 1906.

पीठासीन होने के थोड़े ही दिनों पश्चात्
'भारत धर्म महा मण्डल'
वाराणसी द्वारा आयोजित इसी मंडल की एक विशेष बैठक
कलकत्ता में हुई जिसके सभापति महाराजा दरभंगा नरेश थे
और आपश्री उपर्युक्त महामण्डल के संरक्षक थे
उस समय उक्त आयोजन में पधारने हेतु
आपश्री के यहां जो विशेष निमंत्रण पत्र आया था
उसे यहां उद्धृत किया जा रहा है।

॥श्री राधारमणो विजयतेतराम॥

सिद्धश्री १०८ श्री राधारमण पादारविन्द मकरन्द भ्रमराय माण
निखिल वेदोपनिषदेतिहास पुराण मीमांसा कुशल साधुजन मनो
रञ्जक श्रीतत्त्व धूतान्यादिगन्त प्रभास्क श्री मान्य महीदेव
ल धवर श्रीजी के सेवा में- इतः कोयलादेवा सें श्रीमहान्त
हरिप्रिया शरण जी के साष्टाङ्ग प्रणाम पाय निवेदितं
आगे- बहुत दिन सें कुशलानन्द ना मिलन रहल ह- पत्रपा कर
परमानन्द हुआ- आगे- महाराज बहादुर सुकुशल हथुए
में हैं- आप के तरफ सें आशीर्वाद खबर कुशलानन्द कहा
जायगा- खबर कुशलानन्द पूछा जायगा- चतुस्सम्प्रदाय
सभा महाराज तिमा के तरफ से स्थापित है- जिसका स
भापति गत वर्ष में तोताद्रि के स्वामी जी रहे- पटना
मे सभा हुई- जिस में साधारण धर्म्म का व्याख्यान
हुआ- तिन पण्डित बल्लभ कु[illegible] न के थे कि ज
लोग आपनी सम्प्रदाय के उन्नति ता लिये हरए व्याख्यान दि
ये- खबर- नियमित सभा समाप्त होने पर तोताद्रि आ
चार्य्य जी आपनी सम्प्रदाय की सभा कराई-- जिसका
वृत्तान्त मालुम नहीं है -आगे- प्लेग का प्रकोप इहां भी है
पर ठाकुर जी के- सान्निकट नहीं है ---श्री सुदर्शन भगवान्
का चित्र इहां रह गया सो- इस जगह सें नहीं भेजा गया की पहुंचाना
ही- अधिकारी श्र- समन्दर --२ श्री वृन्दावन जाते
हैं- भेज दिया जायगा

सम्वत्- १९ ७४-

फा॰ शु॰ १- सोमवासर-

वर्द्धमान की यात्रा के साथ ही साथ आपश्री का ऊखड़ा, हतुआ, चेतवा तथा कोयलादेवा आदि स्थानों में भी पधारना हुआ था। सभी स्थानों में आपश्री का भव्य स्वागत किया गया। इन सभी स्थानों का आचार्यपीठ से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है और समय-समय पर पत्राचार भी होता रहता था। इस सन्दर्भ में कोयलादेवा से आये हुए एक पत्र का चित्र यहां दिया जा रहा है।
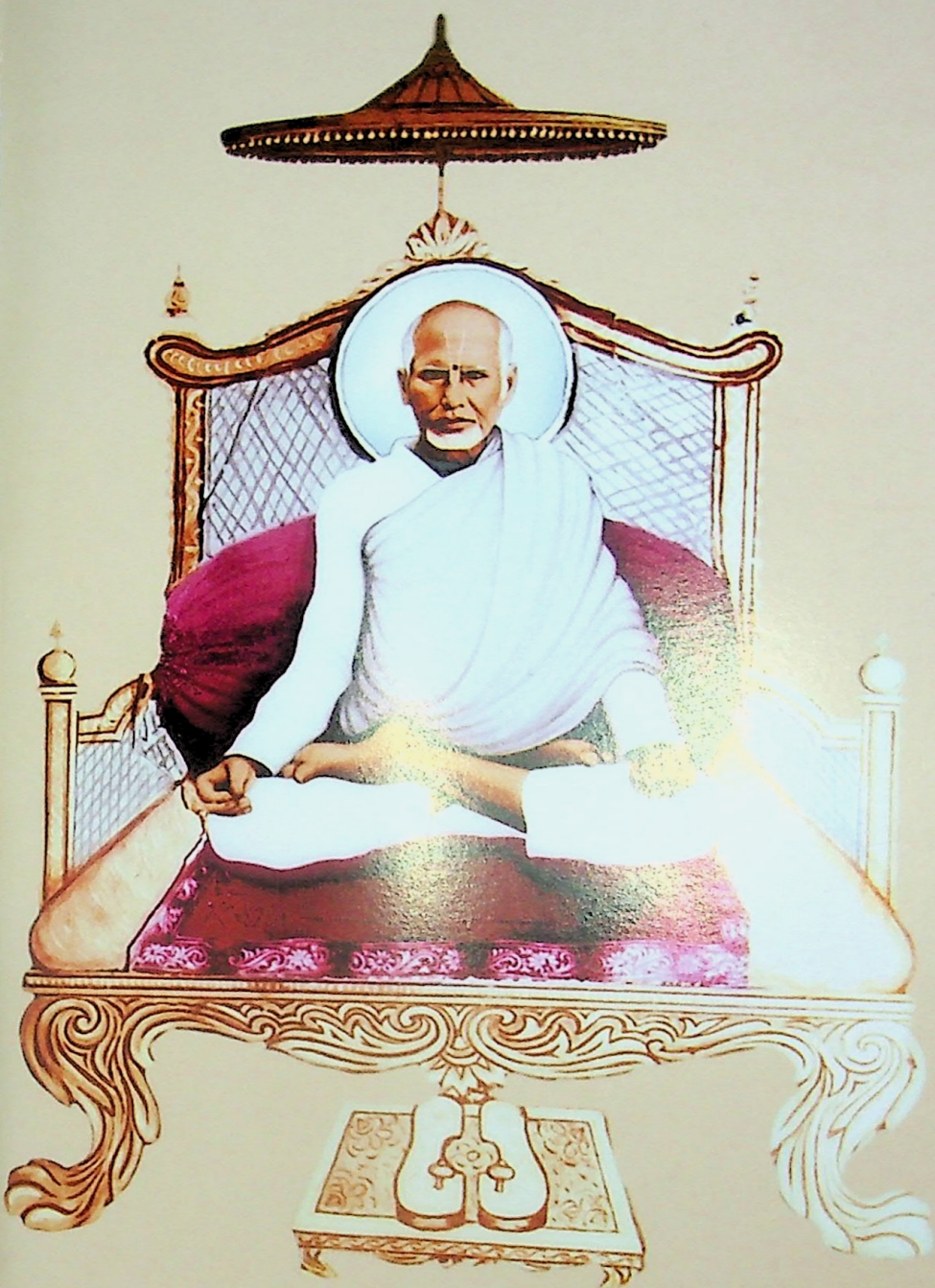
अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्री बालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज

श्रीगुरुमहिमा

(१)

गुरु बिन कौन करे भव पार॥ टेर॥
जय गुरुदेव तिहारी जग में, महिमा अपरम्पार॥

श्रीगुरु चरणकमल-रज लेकर, नित प्रति मस्तकधार।
गुरु-सेवा से बढ़कर कोई, इस जग में नहीं सार॥

गुरु-गोविन्द में गुरुहि बड़े हैं, कह रहे शास्त्र पुकार।
'सन्त' सदा भज राधामाधव, जासों होय उबार॥

(२)

जय-जय सत गुरु दीनदयाल॥ टेर॥
बलि-बलि जाऊँ चरणकमल की, महिमा परम विशाल।
आवागमन-मिटावन-हारे, शरणागत-प्रतिपाल॥

श्रीगुरु-चरण-शरण जब जावे, सब दुःख देवें टाल।
'सन्त' सदा गुरु-सेवा कीजे, छाँड़ि कपट जंजाल॥